CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

व्यापारे वसते लक्ष्मी

ॐ

भाग्य परीक्षा

अर्थात्

ज्ञान चन्द्रिका

जिसको

पं०- बृजमोहन लाल मिश्र

ने

अनेक प्राचीन ग्रन्थों की सहायता

से जनसाधारण के लाभार्थ

संग्रह किया

मूल्य १)

प्रकाशक:—ला० शोभाराम जैसवाल

गुलज़ार कंपनी, अलीगढ़।

Printed by Ram Lal Sharma at the Ram Lal Printing Press, Aligarh.

खेल तमाशे जादू की अपूर्व पुस्तक

तिलस्मी जादूगर

इस पुस्तकसे चाहेजो स्त्री पुरुष ऐसे २ आश्चर्य दायक खेल जैसे पानी के बर्तन में फूल तैयार करना डिब्बीमें रुपया छुपाना जादू की पेटी बनाना, मनुष्य को गुप्त करना, छाती पर पत्थर तुड़वाना, जीभपर छुरी मारना, काग़ज़की मछलियोंको लड़ाना काया कल्प करना, लोहे की गरम ज़ंजीर हाथ से खींचना दारू का दूध बनाना, आम और अनन्नास के पेड़ फौरन पैदा करना अंगूठी गुप्त करना, टोपी से आग निकालना, बिच्छू पैदा करना इत्यादि अनेक जादू के खेल स्वयं सीखलेंगे मू० १।)

कलियुग में प्रत्यक्ष फल दिखाने वाली

असली करामात

जिसमें योग विद्याके समस्त अंग मैस्मरेज़्म हिप्नाटिज्म द्वारा दूसरे मनुष्य का रहस्य जानना, दूर देश की बातों को एकही स्थान पर बैठेहुए क्षण मात्रमें जान लेना पृथ्वी में गड़ाहुआ धन देखना पशु पक्षियों की बोली पहचानना अंतर्ध्यान होना चाहे जितना हलका व भारी हो जाना बिना औषधि पान किये कठिन रोगों की चिकित्सा करना भूत प्रेत इत्यादि को बुलाना मृतक आत्माओं से बातचीत करना यंत्र मंत्र तंत्र वशीकरण करना त्रिकाल दर्शी आयना मेस्मरेज़्म की अंगूठी आदि बनाने की सुगम रीति वर्णित है जिन्हें आप बाज़ार से पांच २ रुपये तक में खरीदते हैं ऐसी अमूल्य पुस्तक का मू० १।) खर्च ।=)

मिलने का पता:-गुलज़ार कम्पनी अलीगढ़

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

भूमिका

जगत प्रसिद्ध चौदह विद्याओं में से ज्योतिष विद्या भी एक कला है। इसमें ग्रह सम्बन्धी बिषयों का विचार किया गया है प्राचीनकाल के ऋषि महर्षि प्रायः इसी विद्या द्वारा भूत भविष्यत और वर्तमान काल का हाल कहा करते थे। इसी विद्या द्वारा मनुष्य के भाग्य की परीक्षा भी करते थे। जिस समय इस विद्या का भानु अपनी पूर्ण कलाओं से प्रकाशमान होरहा था वह समय संस्कृत भाषा का था इस लिये इस विषय पर जितने भी सिद्धान्त लिखे गये वह सब संस्कृत भाषा में ही थे अब आ कर समय ने पलटा खाया संस्कृत भाषा के ज्ञाता कम होते गये धीरे धीरे जैसी भाषा नई बनती गई वैसी ही भाषा में उनका अनुवाद होता गया। यहां तक नौवत पहुंची कि हिंदी भाषा में भी अनुवाद हुआ। परन्तु वह ऐसा पेचीदा और गोल मोल हुआ जिसको साधारण मनुष्य सरलता पूर्वक नहीं समझ सकते हैं।

यों तो अनेक ग्रन्थ इस विषय पर अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। परन्तु जन साधारण के हितार्थ कोई भी सरल और साधारण भाषा वाला ऐसा उपयोगी ग्रन्थ अभीतक प्रकाशित नहीं हुआ अतएव इस त्रुटि को पूर्ण करने का उद्योग ला० शोभाराम "जैसवाल" मालिक गुलाजार कम्पनी अलीगढ़ने बहुत सा धन व्यय कर अनेक प्राचीन प्रकाशित तथा अप्रकाशितग्रन्थों का संग्रह कर उसको सरल भाषामें लिखनेकाभार मेरे ऊपर डाला जिससे प्रत्येक मनुष्य अपना कार्य सुगमता से निकाल

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सके चूंकि ज्योतिष विद्या बड़े महत्वकी है उसका समझना महा कठिन है फिर भी उसको सरल भाषा में करना इतने बड़े कार्य का बोझ उठाना अपने बल से परे समझ अनेक ज्योतिष विद्वानों की सहायता लेकर लिखना प्रारंभ किया। इसमें अनेक विषय ऐसे भी हैं कि जिनका प्रत्येक मनुष्य को सदैव काम पड़ता रहता है ज्योतिष का काम करने वालों को तो बड़े काम की चीज है। इसमें ग्रहों की गणना उनके शुभाशुभ फल जन्म कुन्डली वर्षफल इत्यादि नित्य प्रति व्यवहार में आने वाली सभी बातोंके अतिरिक्त मनुष्य के "भाग्य परीक्षा" पर अधिक विस्तार दिया गया है। प्रत्येक वस्तु की तेजी मंदी चोरी गई वस्तु का मिलना न मिलना पृथ्वी में गढ़ा धन इत्यादि विषयों का भी वर्णन है ।

हम उक्त महानुभाव ला० शोभाराम "जैसवाल" मालिक गुलजार कम्पनी अलीगढ़ को हार्दिक धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने इस कमी को पूर्ण करने के लिये अपना अमूल्य समय और धन दौनोंही खर्चकर परोपकार किया और जन साधारणको ज्योतिषका प्रकाश दिखलाकर भाग्य परीक्षा करानेमें सहायता दी

ज्योतिष विद्या का समस्त फल उसकी गणित पर निर्भर है यदि ज्योतिष पंडितों ने उसका गणित ठीक ठीक निकाल लिया तो फल भी अवश्य सही होगा अतएव विद्वजनों से निवेदन है कि वह गणित करने में भूल न करें अन्यथा फल गलत निकलेगा और मनुष्य उस पर ध्यान न देंगे। ऐसी प्रिय पुस्तक के प्रकाशित करने का सर्वाधिकार ला० शोभाराम "जैसवाल" मालिक गुलजार कम्पनी अलीगढ़ को दे दिया है ताकि वह इसका प्रचार सर्वत्र में सदैव करते रहें।

लेखक—

शिव रात्रि
१९८८ } बी० मोहन मिश्र

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

भाग्य परिक्षा

प्रथमाध्याय

प्राचीन जोति आचार्यों ने ज्योतिष विद्या द्वारा जो ग्राहादि सिद्धान्तों का निर्माण किया है उन्हीं द्वारा भाग्य परिक्षा की जाती है। जन्म काल में जो शुभाशुभ गृह पड़ते हैं वही अपना फल समय पाकर दिखाया करते हैं। उन्ही ग्रहों को समय आने से पूर्व जान लेना मनुष्य का भविष्य अथवा उस के भाग्य की परीक्षा है।

ग्रह क्या चीज है

ग्रह आकाश में घूमते तथा दिखाई देने वाली चीज़ हैं। इन ग्रहों की पहचान को भारत के अतिरिक्त यूरूप वाले भी मानते हैं। फारसी और अर्बी भाषा वालों ने तो यूरुप वालों से भी पहिले ग्रह की चालों के नकशों का अनुवाद संस्कृत पुस्तकों से अपनी भाषा में कर डाला था। जिस प्रकार कि आकाश में सूर्यादि ग्रह है। उसी प्रकार पृथ्वी भी एक प्रकार का ग्रह है। जिस को भूलोक या भूगोल कहते हैं।

आकाश में असंख्य ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते रहते हैं परन्तु प्राचीन आचार्यों ने उन में से मुख्य पांच माने हैं। यही पांच ग्रह सब से बड़े हैं इन ग्रहों में से पहिला बुध, दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल चौथा बृहस्पति, पांचवां शनि है।

इन पाँचों के अतिरिक्त दो ग्रह और है जिन में से एक को पृथ्वी का उपग्रह कहते हैं वह छटा है ग्रह चन्द्रमा है और सब का अधिपत सांतवां सूर्य है।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सौर्य वर्ष

सूर्य पृथ्वी से तेरह लाख गुना बड़ा है इस के चारों ओर समस्त ग्रह घूमते रहते हैं। यह किसी के पीछे नहीं घूमता केवल अपनी कीली पर घूमता रहता है। सूर्य का घेरा चार भागों में विभाजित हैं और प्रत्येक भाग के तीन तीन भाग समानांश किये है अर्थात् ४×३=१२ के, इस लिये केन्द्र से समानान्तर सूर्य के बारह भाग हुऐ।

वर्ष और मास कैसे बने

चूकि ∴ सूर्य १२ भागों में विभाजित है और प्रत्येक भाग को ३० अंश का जोतिर्विद्दज्जनों ने माना है ∴ १२×३० = ३६० यह समस्त वृत के अंश हुऐ यदि इस में १२ का भाग दिया जाता है तो ३६०÷१२=३० अर्थात् सूर्य के घेर के चतुर कौण का एक भाग आया।

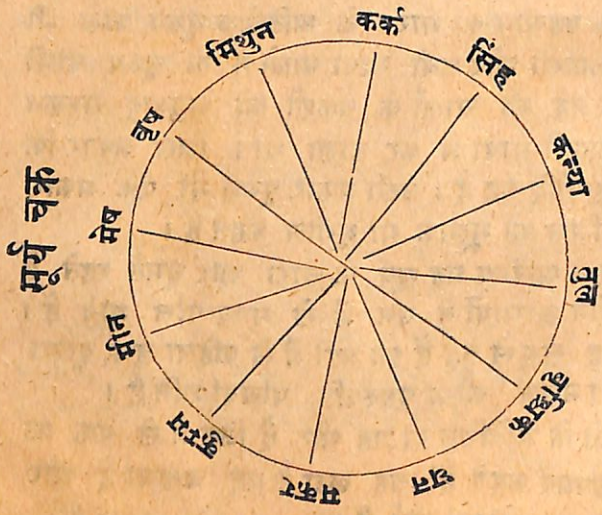

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

संक्राति किसे कहते हैं

सूर्य का घेरा जो बारह भागों में बटा हुआ है उसके प्रत्येक भाग को सक्रांति कहते हैं। अर्थात् सूर्य इन्हीं बारह भागों के सामने आता जाता रहता है। अथवा यों कहिये कि सूर्य के ठहरने के यह बारह स्थान हैं। इन्हीं को शीश व लग्न ज्योतिऽचार्यों ने माना है। सूर्य को एक भाग से दूसरे भाग तक जाने में जितना मार्ग चलना पड़ता है वह प्रत्येक तीस अंश का है इस लिये एक भाग से दूसरे भाग तक आना उसका एक सूर्य मास हुआ।

वर्ष और मास कैसे बने

सूर्य की चाल से वर्ष और मास बनाये गये हैं

∵ सूर्य के भाग १२ हैं और प्रत्येक की दूरी ३० अंश की है

∴ ३०×१२=३६० अंश का एक वर्ष हुआ अर्थात् ३६० अंश जब सूर्य चल लेगा तब ही उसका एक चक्र पूरा हो जावेगा उसी को एक वर्ष कहेंगे। और एक भाग से दूसरे भाग की दूरी ३० अंश की है इसलिये प्रत्येक भाग को एक सूर्य मास माना इन्हीं भागों के साथ साथ गृह भी चलते रहते हैं इसलिये उन ग्रह को दिन मान लिया चाहे रविवार सोमवार इत्यादि को दिन कहिये चाहे गृह अर्थ दोनों का एक ही है

सूर्य की चाल

सूर्य का वर्ष ३६५ दिन १५ घड़ी ३१ पल ३० विपल का होता है

∵ सूर्य का व्यास ८६५००० मील का है और सूर्य की चाल एक सैकंड में १९ मील की है और २४ घंटे में १६४१६०० मील चलता है इस कारण उसका प्रकाश ८ सैकिंडमें पृथ्वी पर आवेगा। सूर्य के उत्तरायन और दक्षिणायन दो अयन होते हैं।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

चन्द्र वर्ष

यह पृथ्वी के चारो ओर २९½ दिन में घूम लेता है। यह पृथ्वी से २½ लाख मील के अनुमान दूर है। इसका एक भाग सदैव पृथ्वी की ओर रहता है। चन्द्रमा सदैव घटता बढ़ता रहता है इसी कारण चन्द्रमास के दो पक्ष रक्खे हैं जिनको शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष कहते हैं चन्द्रवर्ष का एक मास २९½ दिन का होता है और साल के १२ मास होते हैं

∴ १२ × २९½ = ३५४ के इससे सिद्धि हुआ कि चन्द्र वर्ष ३५४ दिन का है मुसलमान इसको साल कमरी कहते हैं।

साल कमरी का भेद

चूंकि मुसलमान साल को चन्द्रमा से मानते हैं इसलिये उनका वर्ष ३५४ दिन का होता है कभी कभी ३५५ दिन भी हो जाते हैं और इंग्रेजों का वर्ष ३६५ दिन ६ घंटेका होता है परन्तु भारतीय दोनों को मानते हैं क्योंकि सौर्यमास मेषादि राशि हैं और चन्द्रमास चैत्र वैसाखादि है इंग्रेजी मास में जो ६ घंटे अधिक बढ़े हुऐ हैं वही चौथी साल में जाकर एक दिन बढ़ जाता है अर्थात् जिस साल को चार का भाग देने से पूरा बट जाय उसी साल में फरवरी महीना २९ दिन का होजावेगा

अधिक मास

भारतीय चन्द्र और सूर्य दोनों वर्षों को मानते हैं इस लिये यह दोनों के अन्तर को निकाल कर अधिक मास निकाल लेते हैं जिस का नाम लौंद है। मुख्य अभि प्रायः लौंद मास निकालने का यही है कि दोनों वर्षों की काल संख्या मिल कर एक रही आवे। भारत के मुसलमानों के अतिरिक्त ईरानी लोग लौंद काल मानते हैं।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

चन्द्रमा के ठहरने का समय

प्रत्येक राशि अथवा लग्न या संक्रान्त के राशि भाग पर २½ दिन तक रहता है।

सूर्य ग्रहण निकालना

जिस समय चन्द्रमा घूमते २ सूर्य और पृथ्वी के बीच में आजावेगा उसी समय सूर्य ग्रहण हो जावेगा।

बुध का वर्ष

बुध पृथ्वी से १० करोड़ मील की दूरी पर है और सूर्य से ३ करोड़ मील दूर है इसकी चाल प्रति सैकेण्ड ३० मील की है व्यास इस का ३००० मील है। ८८ दिन में सूर्य के चारो ओर घूम लेता है इस लिये भूमि के ८८ दिन का इस का एक वर्ष है इसके दिन रात २४ घटे ५मिनट के अनुमान होते हैं।

शुक्र का वर्ष

यह सूर्य से ६ करोड़ ७० लाख और पृथ्वी से १६ करोड़ ८० लाख मील दूर है व्यास ७७०० मील है। २२४ दिन में सूर्य के गिर्द घूम लेता है इस लिये २२४ दिन का वर्ष शुक्र का हुआ यह एक राशि पर १८ दिन ठहरता है।

मङ्गल का वर्ष

इसका अन्तर भूमिसे ३० करोड़ मील और सूर्यसे १४ करोड़ दस लाख मील दूर है व्यास इसका ३२०० मील है यह सूर्य के गिर्द ६८७ दिन में घूम लेता है इस लिये इस का वर्ष ६८७ दिन का हुआ और दिन २४ घंटे के अनुमान पर हुआ।

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

बृहस्पति का वर्ष

यह सूर्य से ८२ कराड़६० लाख मील और पृथ्वी से ६८ करोड़ मील दूर है और व्यास १२००० मील है यह २६½ या ३० वर्ष में सूर्य के चारों ओर चक्र लगाता है इस लिये एक राशि पर ३० मास ठहरता है।

राहु और केतुका वर्ष

इन दोनों ग्रहों का पता नहीं चलता केवल गणित के ग्रन्थों में सात ही यह आये हैं जिन को सात दिन या ग्रह कहते हैं इन्हीं के कुण्डली में १२ घर बनाये जाते हैं। इन ग्रहों का पता भारतीय ग्रन्थों के अतिरिक्त ग्रीकादि विदेशी पुस्तकोंमें भी नहीं है परन्तु ग्रह लाघवादिके इन का वर्ण इस प्रकार कहते हैं कि—

यह सूर्य से २ लाख मील दूर है व्यास २२०० मील हैं यह सूर्य के गिर्द १८ साल में घूम आते हैं यह दौनों ग्रह अपने से सातवें गृह में अर्थात दोनों आमने सामने हैं।

राशियों के स्वामी

मेषका मंगल, वृषका शुक्र, मिथुनका बुध, कर्कका चन्द्रमा, सिंहका सूर्य, कन्या का बुध, तुलाका शुक्र, वृश्चिक का मंगल, धनका बृहस्पति,मकरका शनि, कुम्भका शनि,मीनका बृहस्पति।

राशियों का रूप

मेष का मेंढे के अनुसार, वृष बैल के समान मिथुन का दो जुड़े मनुष्यों का कर्क का केकड़े के समान (नदी जन्तु) सिंह का शेर, कन्या का लड़की, तुला का तराजू, वृश्चिक का बिच्छू, धन का धनुष, मकर का नाका या मगर, कुम्भ का घड़ा, मीन का मछली, समान रूप है।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

जिस प्रकार के नाम इन राशियों के हैं उसी प्रकार के उनके स्वरूप भी माने गये हैं अर्थात् मेष का अर्थ मेंढ़ा है और वृष का बैल इसी प्रकार औरों को भी जानो।

राशि चक्र

मेष-राशि पुलिंग अवस्था इसकी चर विषम है रंग इस का लालहै वर्ण क्षत्री तथा चार पैर वाला शरीरका पुष्ट,स्वभाव का उग्र, पर्वत वासी दिन में बलवान तथा क्रांति का रूखा है।

वृष—इसकी नारी संज्ञा है स्थिर वायु कारक सतो गुणी रूखा है।

मिथुन—पुलिंग का मध्यम बिषम वायु कारक चिकना है

कर्क—स्त्रीलिंग मध्यम कफकारी और चिकनेरूपका होताहै

सिंह—पुलिंग स्थिर शरीर हृष्ट पुष्ट विषम पित्त कारी और रूखा होता है।

कन्या—स्त्री लिंग कफ कारी चिकना होता है।

तुल—पुलिंग शरीर का पुष्ट विषम पित्तकारी रूखा है।

वृश्चिक स्त्री लिंग श्वेत वर्ण दुबला पतला सम कफ कारीऔर रूखा होता है।

धन—पुलिंग बिषम पित्तकारी रजोगुणी उग्र स्वभाव रूखा होता है।

मकर—स्त्री लिंग पीला वर्ण चार चरण वाला देह का पुष्ट सम वायुकारी मैला और रूखा होता है।

कुम्भ—दो चरण वाला पुलिंग पुष्ट शरीर वाला बिषम वायु कारक और रूखा होता है।

मीन स्त्री लिंग बिना चरण वाला पुष्ट शरीर सम कफ कारी चिकना होता है।

चतुर ज्योतिषी इन्हीं राशियोंके आकार बिचार और स्वभाव तथा रंगरूपके अनुसार फल कहते हैं तथा जन्मपत्र बनाते हैं

लग्न बिचार

ज्योतिर्विद्या में संक्रान्ति राशि और लग्न तीनों का अर्थ

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

एक ही है। मेषादि राशियों का संम्बन्ध सूर्य के साथ है इस लिये उस के बारह भागों का नाम बारह महीने और उन के एक एक अंश का नाम महूर्त या दिन है। यह संक्रान्ति के दिन छोटे बड़े हुआ करते हैं। क्यों कि कोई संक्रान्ति ३० महूर्तों कोई २९ और कोई ३१ मुहूर्तोंतक की बैठती है। इस हिसाब से कोई महीना ३० दिन का कोई २९ का और कोई ३१ का हुआ करता है। जिस समय सूर्य बारह राशियों के बारह अंश अर्थात व्यास चारों ओर घूम लेगा तब एक सालपूरा होजावेगा

सूर्य अपनी धुरी पर ६० घड़ियों में एक वार घूम लिया करता है इस लिये ६० घड़ी का १ दिनरात हो जाता है।

मेष राशि की संक्रान्ति सदैव इंगरेज़ी तारीख १३ अप्रैल को हुआ करती है। जिस दिन इंग्रेजी मास की १३ अप्रैल होगी उसी दिन मेष राशि का पहला अंश हो जावेगा अर्थात मेष राशि का पहला दिन हुआ। इसी प्रकार ३० या ३१ दिन में मेष राशि को समाप्ति कर जब वृष राशि पर आवेगा तो उस दिन वृष राशि में एक सौर्य मास हो जावेगा। उन तीसौ दिन के भीतर प्रातः काल के समय सूर्य मेष राशि का रहेगा फिर वृष राशि में आकर ६० घड़ी रह कर मिथुन राशि में पहुंच जावेगा तब वृष की संक्रान्ति १४ मई को होगी उस समय सूर्योदय में वृष लग्न रहेगी फिर मिथुन कर्कादि से लेकर सारे दिन रात में मेष तक पहुंच जावेगा।

इंग्रेजी तारीख से संक्रान्ति लगाना

चूँकि मेष की संक्रान्ति १३ अप्रैल को होती है इस लिये मास की समाप्ति १३ मई को संक्रान्त हो जावे इस के बाद ३० दिन चल कर १४ जून को मिथुन की फिर ३१ दिन चल कर १५ जौलाई को कर्क की फिर १६ अगस्त को सिंह की १६

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सितम्बर को कन्या की १६ अक्तूबर को तुल की तथा १५ नवम्बर को वृश्चिक की और १५ दिसम्बर को धन की इसी प्रकार १३ जनवरी को मकर की १२ फरवरी को कुम्भ की और १३ मार्च को मीन की होगी।

बारह राशियों में प्रतिदिन संक्रान्ति का समय

लग्न	मेष	बृष	मिथु०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि०	धन	मकर	कुम्भ	मीन
घ०	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
प०	३४	७	१	४५	५१	४२	४२	४२	४५	१	७	३४
सूर्य की चाल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल
	७	८	१०	११	११	११	११	११	११	१०	८	७
	बिपल	विपल	बिपल	बिपल	बिपल	बिपल	बिपल	बिपल	बिपल	विपल	बिपल	बिपल
	८	१४	२	३०	४२	२४	२४	४२	३३	१२	१४	८

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मतलब की बात

यह पुस्तक ज्योतिष पंडितों को सदैव अपने पास रखनी चाहिये इससे उन को बडी सहायता मिलेगी। जोतिर्विद्वज्जनों को गुणा भाग और त्रैराशिक अवश्य सीखलेना आहिये क्योंकि ज्योतिर्विद्या में इसी का अधिक काम पड़ता है। मुख्य बात कुंडली का फल कहने तथा कुंडली के बनाने में ठीक समयकी आवश्यकता है। यदि समय ठीक होगा तो फल ठीक निकलेगा इस लिये बालक के जन्म होने से एक दो दिन पूर्व अपने घर में सही समय मिला कर एक घड़ी रख लेनी चाहिय जिस से कि जन्म का समय घटा मिनट तथा सेकंड सहित सही ज्ञान हो जावे।

जन्म कुण्डली बनाना

जन्म पत्री वनाने में मुख्य इष्ट काल और जन्म के सही समय की आवश्यकता पड़ती है इसलिये विद्वज्जन इस का विशेष ध्यान रखें साथ ही साथ लग्न, और दिन मान की भी आवश्यकता होती है।

दिन का इष्ट निकालना

जब जन्म का समय ठीक मालूम होजावे तब पंचांग में जन्म दिन का दिनमान देख कर उस का आधा करलो दो पहर के बारह बजे का वक्त निकल आवेगा क्यौं कि पंचाँग में जो दिन मान रक्खा है यह पूरे रात दिन का दिनमान है जब इस का आधा किया तो १२ घंटे अर्थात् दिन के बारह बजे का निकल आया। यदि बच्चे का जन्म दिन के बारह बजे का है तो उसका वही इष्ट मानलो। यदि इस से

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

पहिले का है तो उन घंटे और मिनट के घडी पल बना कर दिनार्धमें से घटा दो। यदि दोपहर के बारह बजे के बाद का है तो उस के घड़ी पल बना कर जोड़दो इष्ट निकल आवेगा।

रात्रि का इष्ट निकालना

जिस प्रकार दिन के जन्म में दिन मान पंचाङ्ग में देख कर दिन का इष्ट निकाला है उसी प्रकार रात्रि के जन्म का पंचाङ्ग में रात्रि मान देखकर इष्ट निकाल लो।

दिन के इष्ट का उदाहरण

किसी बच्चे का जन्म सम्बत् १९८५ वैसाख कृष्ण दौज शनिवार को ९ बजे हुआ इस का इष्ट बनाना है।

माना कि वैसाख कृष्णा दौज के दिन दिनमान ३१ घड़ी ८ पल का है

∴ ३१ घडी ८ पल का आधा १५ घडी ३४ पल हुआ यह उसका १ दिनार्ध है

अब ∵ जन्म दिन के ९ बजे का है यह १२ बजे से ३ घंटे पहिले होता है

∴ ३ घंटे के घडी पल बनाये तो ३×२॥=७॥ (७ घडी ३० पल)

अब जन्म का दिनार्ध १५ घडी ३४ पल का है

∴ १५ घडी ३४—७ घडी ३० को घटाया=८ घडी ४ पल हुऐ

∴ ८ घडी ४ पल दिन के ९ बजे का इष्ट काल हुआ

यदि जन्म बारह बजे के बाद २ बजे का होतो बारह बजे से २ बजे तक २ घंटे होते हैं

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

इस लिये २×२॥=५ घडी के हुए इस को दिनार्ध अर्थात् १५ घडी ३४ पल में जोड़ा १५ घडी ३४ पल×५ घडी=२० घडी ३४ पल

∴ इष्ट २० घड़ी ३४ पल दिन के २ बजे का हुआ

रात्रि का इष्ट निकालना

यदि किसी का जन्म रात्रि के ११ बजे का बैसाख कृष्णो २ सम्बत् १९८५ को हुआ तो इष्ट निकालो

∵ जन्म रात्रि के ११ बजे का है

∴ ३० घड़ी दीनार्ध में उसको जोड़ा तो ४५ घड़ी ३४ पल रात्रि के १२ बजे का अर्ध रात्रि मान हुआ

∵ जन्म १२ बजे रात्रि से पहिले ११ बजे १ घन्टे पहले का है और एक घंटे की २ घड़ी ३० पल होते हैं

∴ ४५ घड़ी ३४ पल रात्रि मानमें से २घड़ी ३० पल—घटाया तो४३ घड़ी ४ पल बाकी रहे यह रात्रि के बारह बजे का इष्टकाल हुआ। इसी प्रकार यदि जन्म १२ बजे के बाद २ बजे का है तो रात्रि मान में घटाने के स्थान पर २ घंटे की ५ घड़ी जोड़दो अर्थात् ५० घड़ी ३४ पल रात्रि के २बजे का इष्ट काल हुआ

घंटों और मिनट के घडी पल बनाने की रीति

दिन रात २४ घंटे का होता है और २॥ घड़ी का १ घंटा होता है इसलिये:—

२॥ घड़ी=१ घटा	६० सैकंड=१ मिनट	६० विपल=१ पल
२॥ पल=१ मिनट	६० मिनट=१घंटा	६० पल=१ घड़ी
२॥ विपल=१सैकंड	२४ घंटे=१ दिनरात	६०घड़ी=१दिनरात

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लग्न देखना

ज्योतिष का काम करने वाले राशियों को उनके स्वामी सहित कण्ठ याद करलें क्योंकि इसका काम सदैव पड़ता रहता है और बिना इनके काम भी नहीं चलता।

इष्ट काल निकाल लेने के बाद लग्न देखनी पड़ती है। उसकी रीति यह है कि जिस तिथि की लग्न निकालनी है पंचांग में उस तिथि में देखो कि कितने अंश सूर्य के किस संक्राति में चले गये हैं बस जिस तिथि को जितने अंश सूर्य के विगत हुएहों उनको इष्टकाल में जोड़ कर पंचांग में सारिणी देखो जहां पर वह अश मिले वही लग्न होगी।

उदाहरण

वैसाख कृष्ण दौज ६ बजे की सम्वत १९८५ की लग्न देखनी है तो पंचांग में देखने से पता चला कि उस दिन ८ बजे तक मीनकी संक्रान्ति के सूर्यांश २४ गये हैं जो पंचाङ्ग में उक्ति तिथि के अन्त में रवि स्पष्ट के कोठे में ११-२४-२१ लिखा हुआ मिलेगा जिसका अर्थ यह है कि मीन की संक्रांति के २४ अंश सूर्य के समाति हो गये अब सारिणी में अंश के खाने में २४ के कोठे से नीचे मीन के खाने में देखा तो २ घड़ी ३ पल लिखा है उस को इष्टकाल ८ घड़ी ४ पल में जोड़ दिया तो १० घड़ी ७ पल हुआ फिर लग्न सारिणी में देखा कि १० घड़ी ७ पल किस घर में है तो मालूम हुआ कि वृष के खाने में १० घड़ी ७ पल है बस इसकी लग्न वृष हुई। यदि दो चार पल न्यूनाधिक भी होंतो भी वही लग्न रहेगी इस के पश्चात् कुण्डली बनाने का काम पड़ता है।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

कुण्डली बनाना

निम्नलिखित दौनों चित्र कुण्डली के असल रूप के हैं जिस समय जन्म लग्न निकाली जाती है तो जो लग्न सारणी से निकलती है वही लग्न कुण्डली के पहिले घर में रक्खी जाती है उसी क्रमानुसार राशियों का रखते हुये चले जाते हैं यह राशियां क्रमानुसार रक्खा जाता है कुँडली बनाने में मेषादि राशियों के नाम लग्न के साथ साथ नहीं रक्खे जाते केवल उन की गिनती के अंक रक्खे जाते हैं। जैसे मेष गिनती की पहिली राशि है इस लिये उसका १ अंक वृष के २ इत्यादि अंक के क्रमानुसार जानो ऊपर की दौनों कुन्डली मेष लग्न की है अब वृष लग्न की दिखाते हैं।

कुण्डली का चित्र

कुण्डली राशि स्थान चित्र

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

वृष लग्न कुन्डली

मिथुन लग्न कुन्डली

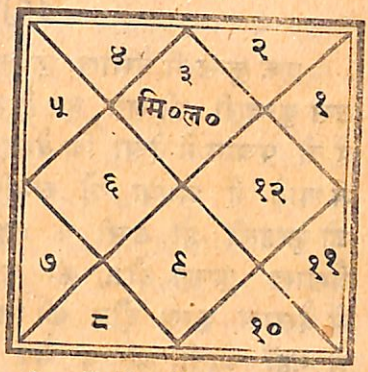

कुन्डली बन जाने के बाद उस के घरों में ग्रहों की स्थापना करनी पडती है।

ग्रह बैठाना

जब कुन्डली बनकर तैयार होजावे तब पंचांग को उठा कर देखो कि जिस तिथी की कुन्डली बनाई है उस तिथि की पंचांग में कौनसी कुन्डली है। जो कुन्डली हो उसी के ग्रह अंकों के क्रमानुसार अपनी कुन्डली में भी बैठादो। यह कुन्डलियाँ प्रत्येक मास में चार होती हैं। अर्थात् दो कृष्ण पक्ष की और दो शुक्ल पक्ष की। कृष्ण पक्ष की एक अष्टमी की दूसरी अमावस की, इसी प्रकार शुक्ल पक्ष में एक अष्टमी की दूसरी पूर्णमासी की, इन्हीं की गणना से पंचांग की कुन्डिलियों की गणना अष्टमी से की जाती है अर्थात् एक कुन्डली पहिली बैसाख कृष्न अष्टमीसे बैसाख कृष्ण अमावस्या तक और दूसरी कृष्ण पक्ष की अमावस्या से वैसाख शुक्ल अष्टमी तक मानी जाती है इस से यदि आगे का जन्म हो तो चैत्र शुक्ल पक्ष की दूसरी कुन्डली देख कर उसके गृह स्थापित करने चाहिये।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

उदाहरण

एक कुन्डली वैसाख कृष्णा दोज सम्बत १९८५ की बनाई उस कुन्डली की लग्न वृष है अब उस में गृह स्थापित करने हैं तो पंचांग में देखा कि वैसाख कृष्ण २ के दिन किस कुन्डली में आते हैं अथवा यों समझिये कि जन्म तिथी के निकट जो कुन्डली हो उसी के ग्रह रक्खे जाते हैं। अब हम को वैसाख कृष्णा दौज की कुन्डली बनानी है। परन्तु पंचांग में वैसाख कृष्ण दौज की तिथि वैसाख कृष्ण की कुन्डली में नहीं आती, अतएव चैत्र शुक्ला की दूसरी कुन्डली के गृह इस प्रकार स्थापित किये।

वृष लग्न कुन्डली गृह स्थापित इसी प्रकार अन्य कुन्डली बनाओ

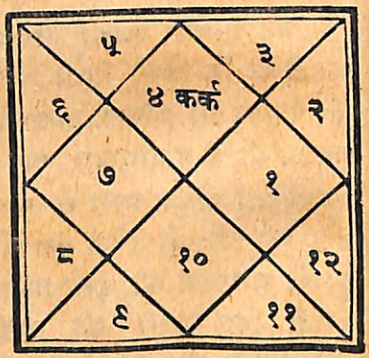

ऐसे कुन्डली में जिस में तिथि निकट देख कर दूसरे मास की कुन्डली रक्खी जाती है उस मैं कभी कभी चंद्र भेद हो जाताहै। जिसको कोई कोई ज्योतिषी पंचांग की कुन्डली सेही चन्द्र राशि रख देते हैं और कोई कोई स्पष्ट करके रखते हैं।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लग्न की दूसरी विधि

यह विधि बिना सारणी देखे लग्न निकालने की है इस में केवल संक्रांति के गत सूर्यांश देख कर ही लग्न रखदी जाती है ऐसी लग्न निकालने को प्रथम ग्रह देखना चाहिये कि जिस तिथि की लग्न निकालनी है उस दिन कौन सी संक्रांति वर्तमान है। बस वही लग्न उस तिथि को सूर्योदय कालमें होगी यह लग्न रात दिनकी६०घड़ियोंमें बारह राशियोंमें समाप्ति होजावेगी। इसी गणना से लग्न निकाल ली जावेगी। तात्पर्य यह है कि जिस दिन जो संक्राति बैठी है उस का एक मास अर्थात् ३० दिन में अपने कुल घड़ी पल भुगतने हैं जैसे २ दिनों की संख्या बढ़ती जावेगी वैसे ही वैसे घड़ी पलों की संख्या घटती जावेगी अर्थात् ३० दिन में पूर्ण संख्या हो जावेगी। और ३१ वें दिन दूसरी संक्रान्ति बैठ जावेगी।

जब कि तिथि सूर्योदय काल में वर्तमान संक्रन्ति की लग्न रहती है तो यह देखना चाहिये कि यह कितने पल की है।

उस के देखने का नियम ऊपर वर्णन होचुका है जितने पल की लग्न हो उतने ही पल ३०में का भाग दो जो लग्न लब्ध आवे वही पल एक दिन में भुगत गये यह नियम इंगरेज़ी १३ तारीख़ से लगाया जायगा अब १३ तारीख से आने वाली १२ मास तक जितने दिनहों लब्धका उससे गुणाकरदो गुणनफल सूर्योदयकाल की लग्न रहेगी उस में आगेकी लग्नोंके घड़ी पल जोड़ते जाओ जब लग्न के घड़ी पल इष्ट काल के घड़ी पल के बराबर होजावे या इष्ट काल लग्न के घड़ी पलों के भीतर हो वही लग्न जन्म समय की होगी।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

दूसरा अध्याय

कुन्डली के घरों का वर्णन

कुण्डली में पहला घर तनका है इस में तन के समस्त पर्यायी शब्द लिखे जाते हैं। जैसे तनु देह शरीर इत्यादि इसी से शरीर के रंग इत्यादि का बिचार किया जाता हैं। दूसरा घर धन का है इस से धन संम्बंधी बातें देखी जाती हैं। तीसरा घर भाई का है इस से सगा भाई तथा परिवार नौकर तथा यात्रा का बिचार होता है। चौथा घर माता का है इस से माता पिता का धन हुआ धन माता पिता के समस्त नातेदारों का बिचार होता है। पांचवां घर संतान का है इस से पुत्र पुत्री गर्भ मंत्र विद्या जामात्र इत्यादि का बिचार होता है। छटा घर शत्रु का है इस से घाव चेचक चोट कैद भय इत्यादि देखे जाते हैं नाना मामा का भी यही घर है। सातवां घर स्त्री काहै इस से चोरी गई वस्तु कलह मार्ग स्त्री का मिलाप उस का चाल चलन घर सम्बन्धी बातें तथा साझा मुकद्दमे की हार जीत जूआ इत्यादि देखे जाते हैं इस घर में सब अशुभ ग्रह होते हैं। आठवां घर आयु का है इस से मृत्यु काल संग्राम में हार जीत नष्ट धन चिन्ता और कैद का हाल देखा जाता है। नवां घर धर्म का है इस से धर्म कार्य पुण्य पाप भाग्योदय मार्ग चलना इत्यादि प्रतापी और ऐश्वर्य संबन्धी बातें देखी जाती हैं। दसवां घर पिता का है इस से पिता की शारीरिक बातें तथा व्यापार में लाभ हानि पिता के धन की वृद्धि इत्यादि बातें जानी जाती हैं। ग्यारहवां घर आय का है इस से आमदनी का हाल तथा व्यापार की तरक्की और

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

परिवार का विचार होता है। बारहवां घर खर्च का है इस से धन का खर्च शत्रुता आंख की पीड़ा कर्ण रोग इत्यादि का विचार किया जाता है।

कुण्डली के घरों के नाम

कुण्डली में जो गृह केन्द्र में होता है उस में सबसे बलवान लग्न घर वाला ग्रह है कुण्डली के पहिले, चौथे, सातवें, और दशमें घर को केन्द्र तथा तीसरे पांचवें नौमें और ग्यारहवें को त्रिकोण और दूसरे छटे आठवें और बारहवें को पण कर कहते हैं।

बलवान गृहों का वर्णन

कुण्डलीके ४, ७, १०, १,११,५,९, घरमें प्रत्येक गृह बलवान होता है चन्द्रमा ९ वें तथा दूसरे घर में बलवान होता है इन घरों में यदि बलवान शुभ ग्रह हों तो शुभ फल और अशुभ ग्रह हो तो अशुभ फल होता है।

जिस घर का स्वामी अपने घर में या अपने घर को देखता हो या स्वामी को कोई शुभ ग्रह देखता हो तो उसका फल शुभ है यदि स्वामी अपने घर में न हो या अपने घर को न देखता हो या उसका कोई शुभ ग्रह न देखता हो तो मध्यम और जो पापग्रह देखता हो तो अशुभ फल होगा।

बुध, वृहस्पति, के योग व दृष्टि से तथा चन्द्रमा शुक्र के साथ शुभ फल देता है।

गृहों का प्रकाश

सूर्य १५ अंश पर चन्द्र १२ मंगल ८ बुध ७ शुक्र ७ शनि ९ अंश पर पूर्ण प्रकाश मान होता है।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लग्न में गृह विचार

जो गृह लग्न में बलवान होता है उसी का प्रभाव शरीर पर पड़ता है जैसे यदि सूर्य बलवान है तो ग्रह रजो गुणी, प्रतापी, भोजन पचाने वाला न्याय तथा प्रबंध कर्ता होता है उस की आखों की ज्योति तीव्र परोपकारी प्रकाशवान होता है। यदि चन्द्रमा बलवान है तो वह शीतल चंचल प्रसन्न चित्त स्त्री जाति का तथा स्त्रियों के गुण वाला श्रंगारादि बनावट पसन्द करने वाला होता है। यदि मगल के परिमाणु अधिक हैं तो साहसी बलवान गरम मिजाज़ और तीव्र स्वभाव वाला होगा। बुध की अधिकता से बुद्धमान विचारवान चतुर कारीगर रजोगुणी प्रकृति वाला ज्ञानवान होता है। बृहस्पति की बलवान वाला धार्मिक न्यायी विद्वान दयावान दानी उत्तम बिचार बाला होगा। शुक्र की विशेता वाली स्त्री स्वभाव वाली स्त्रियों में प्रीति करने वाली कामी बुद्धवान और ज्ञानी होता है। शनिवाला स्थूल शरीर का मोटा आलसी क्रूर झूँठ बोल ने वाला तमो गुणी होता है यदि राहू, केतु बलवान होतो तमोगुणी मूर्ख होगा।

गृहों की उच्चता

कुंडली में गृहों की उच्चता और नीचता का भी बिचार किया जाता है। गृहकी ऊंचता और नीचता उस के सातवें स्थान से देखी जाती है जैसे सूर्य दस अंश पर मेख राशिमें उच्च का होता है और चन्द्र का ३ अंश पर बृष का इसी तरह मंगल मकर राशि पर २८

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अंश गये और बुद्ध कन्या राशि पर १५ अंश तथा वृहस्पति कर्क राशि पर ५ अंश गये और शुक्र मीन राशि पर २७ अंश गये शनि तुला राशि पर २० अंश पर उच्चका माना जाता है।

गृहों की नीचता

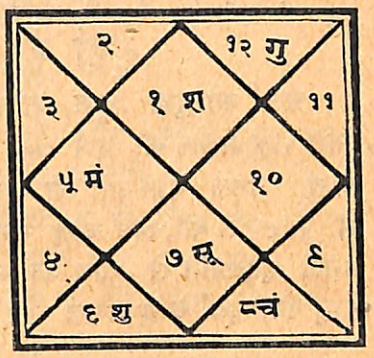

सूर्य तुला राशि पर १२ अंश गये चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर ३ अंश गये, मंगल कर्क राशि पर २८ अंश गये, बुद्धमीन राशि पर १५ अंश गये गुरु मकर राशि पर५अंश गये शुक्र कन्या पर २७ अंश गये शनि मेष पर २० अंश गये पर नीचता का हो जावेगा। जैसे पहिली कुन्डली में मेष राशि का सूर्य उच्चका है ठीक उसी से सातवाँघर तुला का है इस लिये सातवें घरमें वही गृह नीच काकहलावेगा जो अपने पहिलेघर में उच्च का है। देखने से पता चलता है कि पहिले घर से सातवां घर नीचे है इस लिये इस को नीचा और ऊपर के को ऊंचा माना है।

गृह दृष्टि

सूर्य चंद्रमा बुध और शुक्र अपने घर से सातवें घरको देखते हैं, मंगल सातवें, आठवें और चौथे को इसी प्रकार बृस्पति, सातवें नवें और पांचवें को और शनि सातवें दसवें और तीसरे के तथा राहु केतु अपने घर से सातवें और बारहवें को देखा करते हैं। इन गृहों के देखने से प्रत्येक का फल अलग होजाता है।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

ग्रहों की मित्रता

सूर्य का चन्द्रमा, मंगल; बृहस्पति मित्र है। चन्द्र का सूर्य बुध, बृहस्पति, मंगल का सूर्य चन्द्र, बृहस्पति, बुध का शुक्र शनि, बृहस्पति का बुध शुक्र शनि शुक्र का शनि, शनि का शुक्र बुध, राहु केतु का बुध, शुक्र शनि से मित्रता है।

ग्रहों की शत्रुता

सूर्य की बुद्ध, शुक्र, शनि राहु, चन्द्र की, मंगल शुक्र शनि राहु मंगल की, बुध शुक्र और शनि से, बुद्ध की, सूर्य चन्द्र, मंगल बृहस्पति से, बृहस्पि की सूर्य चन्द्र मंगल से, बृहस्पति की, सूर्य चन्द्र मंगल से शुक्र की, सूर्य चन्द्र मंगल बृहस्पति से शनि की, सूर्य चन्द्र मंगल बृहस्पति से राहु की, सूर्य चन्द्र मंगल और बृहस्पति से शत्रुता रहती है।

बारह घरों का दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि – यदि सूर्य पहिले घरको देखताहो तो गर्मप्रकृति और तेज आखों वाला, रुआब वाला हकूमत करनेवाला गर्मी के रोगसे पीडित रहेगा। दूसरे घरको सूर्य देखेतो पिता का धन नष्ट हो उपदेशादि गर्मी के रोग से मृत्यु पावे। तीसरे घर को सूर्य देखे तो ऐश्वर्य बढे भाई में कुछ अनवन हो। चौथे घर पर सूर्य की दृष्टि होतो मामा से झगड़ा पिता से प्यार बचपन में सुख कभी मिले यौवन काल में वृद्धि हो प्रताप बढे ऐश्वर्य वान हो। पाँचवें घर को सूर्य देखे तो संतान का कम सुख विद्या थोड़ी, खिलाड़ी अधिक हो। छटे घर को सूर्य देखे तो चुगल खोर चोर अधिक खर्चीला हो। सातवें घर को सूर्य देखे तो स्त्री तेज स्वभाव की मिले

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

क्रोधी शत्रुता रखने वाला मुक़द्दमे बाज़ हो। आठवें घर पर सूर्य की दृष्टि होतो मध्यम आयु वाला पित्ताज रोग रोगी होगा। नवें घर पर भाई से हेत हो आमदनी कम और खर्च ज्यादा हो। दसवें घर वाला पिता से धन मिले माता से झगड़ा रहेगा सन्तान अधिक हो जिन्दगी आराम से गुजरे। ग्यारहवें घर से ननसाल का सुख न हो शुभ कार्य करने वाला हो।

चन्द्र दृष्टि

पहिले घर को चन्द्र देखे तो कम आयु होगीराङ्ग बुद्धमान श्रंगार में रुचि यदि स्त्री की कुन्डली के पहिले घर को चन्द्र देखे तो पतिव्रता गान विद्या में निपुण होगी। दूसरे घरको देखो तो थोड़ी उम्र पावे सर्दी का रोग वाला रहे तीसरे घर को देखे तो २० साल बाद भाग्योदय हो चौथे घर को देखे तो भूमिपति सवारी मिले राज्य से लाभ हो पांचवें घर को देखे तो कन्या अधिक हो मित्रों में प्रेम सफेद वस्तु लाभदायक होगी। छटे घरको देखे तो जान माल का चौर और शत्रुओं से भय सातवें घर को देखे तो स्त्री स्वरूप मान मिले आठवें घरसे उम्र कम हो नवें घरसे विद्वान तीर्थ करने वाला भाईयों का प्यारा हो। दसवें घर को देखे तो मालियता से सुख मिले। ग्यारवें घरको चन्द्र देखे तो सफेद वस्तुओं से लाभ हो पुत्र कम हो। बारहवें घर चन्द्र देखे तो धब की हानि खर्च अधिक रहे।

भौम दृष्टी

यदि मंगल की दृष्टि पहिले घर को देखे तो लालरङ्ग तेज़ मिजाज़ खूनके रोग में ग्रसित और स्त्री से अनमन रखने वाला हो दूसरे घर में दृष्टि पड़े तो पिता के धन से लाभ नहो

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

व्योपार में लाभ न उठाये तीसरे घर को देखे तो भाई और बहिनों का सुख मिले। चौथे घर को मंगल देखे तो माता पिता का सुख न मिले। पाँचवें घर को देखे तो शत्रुओं को जीत ने वाला छटवें घर को देखे तो स्त्री होतो गर्भ अधिक डाले। सातवें घर को मंगल देखे तो स्त्री से न बने चाल चलन अच्छा न रहे साझियों में झगड़ा हो। आठवें घर को मंगल देखे तो गर्मी के रोग से मरे रुधिर का विकार हो। नवे घरको देखे तो अधर्मी हो। दसवें घरको देखे तो सर्व सम्पति को नष्ट कर दास वृति करे। ग्यारहवें को देखे तो धनवान सन्तान का सुख कम परिश्रमी हो। बारहवें घरको देखे तो खर्च करने वाला हो।

बुद्ध दृष्टि फल

पहिले घर को बुध देखे तो शरीर सांवलो, विद्वान वैद्यक शास्त्र में निपुण हो, दूसरे घरको देखे तो पिता का धन मिले रोज़गार में लाभ हो तीसरे घरको देखे तो भाईयों का सुख मिले चौथे घर को देखे तो माता पिता का सुख मिले। पांचवें घर को देखे तो सन्तान युक्त शिल्प कार हो छटे घर को देखे तो चतुर स्त्री मिले साझियों में प्रेम हो आठवें घरको देखे तो वात रोग से मरे नोवें घर को देखे तो धन कमाने वाला गोन विद्या में चतुर हो। दसवें घर को देखे तो यात्रा में सुख मिले भूमि पति हो। ग्यारहवें घर को देखे तो धन और सन्तान का सुख मिले और स्त्री की कुंडली के ग्यारहवें घरको देखे तो वैश्या वृति कमावे। बारहवें घर को देखे चोरों से हानि उठावे।

गुरु दृष्टि फल

पहिले घर को देखे तो बुद्धिमान पित्तज प्रकृति वाला हो,

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

यदि स्त्री की कुन्डली हो तो पतिव्रता हो दूसरे घर को देखे तो तीर्थ स्थान में मरे पिता का धन मिले तीसरे को देखे तो भाइयों में प्रेम धन पैदा करने वाला भाग्यवान हो चौथे को देखे तो कृषि कर्म से लाभ हो पांचवे को देखे तो विद्वान सन्तान युक्त हो छटे को देखे तो चोर और शत्रुओं से धनहीन सातवे को देखे तो पढ़ी लिखी विद्वान स्त्री मिलेगी आठवे को देखे तो राज्य से हानि मान से मरे नवे को देखे तो धर्म और तीर्थों से लाभ दसवे को देखे तो माता पिता से सुख राज्य में मान और प्रतिष्ठा मिले। ग्यारहवे को देखे तो सन्तान वाला व्यापारी हो बारहवें को देखे तो शत्रुओं को जीतने वाला धन पैदा करने वाला हो।

शुक्र दृष्टि फल

यदि पहिले घर को सूर्य देखे तो मीठा बोलने वाला गोरे शरीर का हो दूसरे घर को देखे तो तीर्थ स्थान में मृत्यु हो पिता का धन मिले पेट विकार रहे तीसरे घर को देखे तो भाइयों में प्रम रहे ३० साल की उम्र में भाग्योदय हो चौथे स्थान को देखे तो माता पिता का प्यारा कृषि कर्म से लाभ उठावे पाचवे स्थान को देखे तो सन्तान युक्त धनवान बुद्धमान और कवीश्वर होगा। छटे स्थान को देखे तो शत्रुओं और चोरों से भय सातवे स्थान को देखे तो रूपवती स्त्री मिले आठवे स्थान को देखे तो मध्यम आयु में शीतविकार से मृत्यु हो बीर्य विकार रहे नवे स्थान को देखे तो यात्रा से सुख मिले दसवै स्थान को देखे तो भवन बनवाये ग्यारहवे स्थान को देखे तो अधिक बोलने वाला विद्वान हो बारहवे स्थान को देखे तो चोरों और शत्रुओं से हानि सदकर्मों में धन का खर्च करने वाला हो।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

शनि दृष्टि फल

पहिले घर को देखे तो सांवला और स्थूल (मोटा) शरीर वाला मूर्ख बड़ी उम्र का हो। दूसरे स्थान को देखे तो पृथ्वी से गढ़ा धन मिले बड़ी मुश्किल से असाध्य रोगी होकर रिझ रिझ कर मृत्यु पावे। तीसरे घर को देखे तो भाईयों में प्रेम दुराचारी निरोगी हो चौथे स्थान को देखे तो माता से प्रेम और पिता से अनबन रहे पांचवे स्थान को देखे तो विद्या हीन मूर्ख संतान अधिक हो परन्तु एक या दो जीवित रहै। छटे को देखे तो मामा का सुख न मिले सातवे को देखे तो बुरे स्वभाव की काली स्त्री तथा भांड रूप की मिले आठवे को देखे तो धन लुटाने वाला चर्म रोग में गृसित आलसी बड़ी उम्र वाला हो नवे घर को देखे तो धन हीन दुराचारी हो दसवे घर को देखे तो पिता से झगड़ा खेती से लाभ ग्यारहवे स्थान को देखे तो सन्तान को बुरे आचरण वाला खेती तथा नीच कर्म से गुजर करे बारहवे स्थान को देखता हो तो लड़ाई झगड़े में अधिक धन खर्च करे।

राहु दृष्टि फल

राहु और केतु दौनों का फल समान होता है इसलिये दोनों के फल का बर्णन भी साथ २ एक ही स्थान पर किये देते हैं। यदि राहु या केतु पहिले स्थान को देखे तो चेचक फोड़ा फुन्सी इत्यादि रोग पैदा करके शरीर को कुडौल और बुरा बना दे अथवा कुबड़ा लंगड़ा या टेड़ा बनादे। दूसरे घरको देखे तो पिता के धन का हरण करने वाला बातज्य रोगों में गृसित धनहीन और रुधिर का रोगी हो। तीसरे घर को देखे तो अपना शरीर पालने वाला भाइयों का शत्रु यात्रा में कष्ट उठावे चोरों से धन

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

का नाश हो चौथे स्थान को देखे तो माता का सुख न पावे पिता के धन धाम को बेचने वाला दरिद्री होवे पांचवे स्थान को देखे तो विद्या हीन मूर्ख सन्तान से वंचित मुशकिल से गुजर करने वाला हो छटे स्थान को देखे तो ननसाल को दुखदाई बुरे आचरण वाला शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला और चोरों को पकड़ने वाला हो सातवे स्थान को देखे तो स्त्री का सुख न मिले यदि मिले भी तो कई स्त्री मर जावें आठवे स्थान का फल बातज और कफज्य रोग हो मध्यम अवस्था में मृत्यु पावे नवे स्थान को देखे तो बिधर्मी हो दसवे स्थान को देखे तो कुल को दुखदाई पिता का शत्रु ग्यारवे स्थान को देखे तो सन्तान को दुख व्यापार में हानि बुरे आचरण वाला मन का मुख्तयार होगा बारहवें स्थान को देखे तो दुराचारी पाप कर्म में धन खर्च करे।

तीसराध्याय

लग्न वर्णन

सब से प्रथम लग्न के बल का जानना परमा वश्यकीय है और उस में यह भी जान लेना आवश्यक है। कि कौनसी लग्न कितने अंशों पर निर्बल तथा सबल अथवा बलवान या कमजोर हो जाती है।

लग्न का बलाबल

प्रत्येक लग्न पहिले अंश से लेकर पांचवें अंश तक निर्बल तथा कमजोर रहती है इस के उपरांत छटे अंश से ग्यारह तक मध्य और बारह से इक्कीस तक बलवान फिर उसी प्रकार बाईस से लेकर २५ तक साधारण फिर २६ से २८ तक निर्बल

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

हो जाती है। इस के बाद २६ अंश से दूसरे घर में जाने वाले अंश तक कम जोर रहती है।

लग्न के स्वामियों का फल

मेष लग्न

मेष राशि का स्वामी मंगल है यदि पहिले घर में मेष राशि आकर बैठे और उस के साथ उसका स्वमी मंगल बैठा हो तो गोरे अङ्ग वाला लालामी लिये हुए बच्चे को जानो स्वभाव उस का उग्र रहेगा अर्थात बहुत जल्दी रूठ जावे और मन जावेगा अगर मंगल उच्च राशि मकर से चौथे घर में सीधी दृष्टि डालता हो और वृश्चिक से मुड़कर आठवें घर को देखता हो तो वह पुरुष बलवान रुआवदार औफीसर या फौज का सरदार होना चाहिये। यदि मेष राशि का सातवें गृह तुला राशि में बैठा हुआ सातवें दृष्टि से देखे और नीच का होकर कर्क राशि पर बैठा हुआ दशवीं दृष्टि से देखे तो धनादि की हानि और शरीर से दुखी रहे। दूसरे घर का मंगल पिता के धन की चिंता उत्पन्न करता है। तीसरे घर वाला भाइयों का सुख दिखाता हैं। पांचवें वाला सन्तान दुख छटे वाला शत्रु नाश नवें पित्तज रोग उत्पन्न करे ग्यारहवें घर का धन की प्राप्ति करावे और बारहवें घर वाला अधिक धन खर्च करता है।

बृष लग्न

इस लग्न का स्वामी शुक्र है। अगर बलवान अवस्था में स्वामी और लग्न दोनों एक साथ बैठे तो गोराङ्ग-सुडौल कवी-श्वर वैद्य शास्त्र में बिजय पाने वाला हो दूसरे घर में पिता को

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

धन मिले तीसरे में भाइयों में प्यार चौथा माता को अच्छा पांचवें से संतान छटे से शत्रुओं का भय सातवें से स्त्री कर्कशा मिले आठवें से शरीर को कष्ट नौवें धर्मात्मा दशवें से पिता को रंज ग्यारहवें से विद्या का लाभ और बारह से खर्च अधिक करे।

मिथुन लग्न

मिथुन लग्न का स्वामी बुध है। यह बली होकर लग्न के साथ यदि पहिले स्थान बैठे तो विद्वान ज्योतिषी शिल्पकार सांवले रंग वाला हो यदि दूसरे घर में बैठे तो चिंता उत्पन्न करे तीसरे में भाइयों से समानता रहे चौथे में माता का गड़ा धन मिले पांचवें से कन्या उत्पन्न हो छटे से शत्रुओं का भय सातवें से स्त्री सुख आठवें से रोग का भय नवे से अधर्मी दसवें से राज सन्मान ग्यारहवें से रोजगार की चिंता रहे बारहवें से खर्च की अधिकता रहे।

कर्क लग्न

इस का स्वामी चन्द्रमा है यह यदि बलवान होकर कर्क वाली राशि के साथ पहिले घर में बैठे तो गोराङ्ग-चंचल जनाने स्वभाव वाला हाव भाव कटाक्ष शृंगार प्रिय शीतल मन्द मुसकान से दूसरे को वश करने वाला हो दूसरे स्थान में पिता को धन मिले तीसरे स्थान से भ्रात प्रेमी चौथे स्थान से माता को प्यारा पांचवे स्थान से पुत्रवान छटे स्थान से चोरों का भय सातवें से स्त्री कर्कशा मिले आठवे से अल्पायु हो नवे मे धर्मात्मा दशवें से राज दरबार में यश ग्यारहवें से व्यौपार में लाभ बारहवें से धन धर्म कार्य में खर्च हों यदि ग्यारहवें घर में वृष लग्न बीतने पर बैठे तो ऐश्वर्य वान धनवान और परिश्रमी होता है।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सिंह लग्न

सिंह राशि का स्वामी सूर्य है यदि सिंह बलवान के साथ सूर्य बली होकर पहिले घर में बैठे तो रजोगुणी अपने परिश्रम से धन पैदा करने वाले शूर बीर यदि नवे घर में १० अंश पर बलवान होकर उच्च में बैठे तो परदेश से धन पैदा करे दूसरे घर में बैठे तो पिता का धन न मिले तीसरे स्थान में पड़े तो भाइयों पर प्रेम रक्खे चौथे स्थान में माता का सुख प्राप्त करे पांचवें स्थान में भ्राताओं का प्यार. छटे स्थान से शत्रुओं पर बिजय सातवें स्थान से स्त्री का सुख मिले आठवे स्थान से खुशकी का रोग रहे पानी अधिक पीवे नवे स्थान से चंचल दसवें से राज सन्मान ग्यारहवें से राज से धन मिलेगा राज में नौकरी करे बारहवें से अधिक धन खर्च करे।

कन्या लग्न

कन्या राशि का स्वामी बुध है। यदि यह बलवान राशि के साथ बली होकर बैठे तो रूखे शरीर वाला दस्तकार विद्वान दसवें स्थान बलवान होकर बैठे तो राज से सन्मान पिता का धन मिले तीसरे घर से भाइयों में अनमन रहे दूसरे से पिता के धन की चिंता चौथे से माता का सुख पांचवें से कन्या कम हों छटे से चोर और शत्रुओं का भय सातवां स्त्री सुशील मिले आठवें से शस्त्र से मौत हो नवे से धर्मात्मा ग्यारहवें से व्यौपार अच्छा रहे बारहवां अदालत में खर्च अधिक करावे।

तुला लग्न फल

तुला लग्न का स्वामी शुक्र है यदि शुक्र बलवान होकर वली ग्रह के साथ पहिले स्थान में पड़े तो गोराङ्ग शृंगार प्रिय

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

स्वेत पदार्थ मोती फूल तथा चावल और दही को अधिक पसंद करने वाला हो दूसरे घर से पिता का धन न मिले तीसरे से भाइयों में समानता रहे चौथा माता को दुखदाई पांचवें से पुत्र सुख विद्या मिले छटे से शत्रु अधिक हों सातवें से स्त्री रूपवती मिले आठवें से वीर्य रोग कफ रोग आयु अधिक नवें से धर्मात्मा दशवें से पिता का सुख ग्यारहवें से ज्ञानी और बारहवें से अधिक खर्च करने वाला।

बृश्चिक लग्न फल

इस लग्न का स्वामी मंगल है यदि यह बलवान गृह के साथ बलवान होकर पहिले घर में बैठे तो क्रोधी शूर बीर उद्योगी हो दूसरे घर से पिता के धन का नाश करे तीसरे से भाइयों में बिरोध रहे चौथे से माता का शत्रु पांचवें से संतान को समान छटे से शत्रुका नाश सातवें से स्त्री रूपवती मिले आठवें से रुधिर बिकार रहे नवें से धर्म में रुचि दसवें से राज सन्मान ग्यारहवें से शरीर को सुख बारहवें से शृंगार बनाव इच्छुक और खर्च करने वाला हो।

धन लग्न फल

इस का स्वामी बृहस्पति है। यदि बली गृह में बलवान होकर प्रथम स्थान में बैठे तो ब्रह्म के समान ज्ञानी, प्रतापी, विद्वान हो दूसरे घर में पिता के धन से बंचित रहे तीसरे घर से भाइयोंमें प्यार चौथेमें भूपति हो माताका प्यार रहे पांचवें से पुत्र से निराश विद्या का लाभ छटे से शत्रु अधिक हों सातवें से स्त्री पढ़ी लिखी मिले आठवें से राज सम्मान ग्यारहवें से ब्राह्मण धारी जीविका करे बारहवें से द्वेष में खर्च हो।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मकर लग्न

मकर लग्न का स्वमी शनि है यदि शनि बलवान हो बली अवस्था में पहिले घर में बैठे तो सांवलरङ्ग आलसी मोटे शरीर वाला हो दूसरे घर में पिता का धन नष्ट करे तीसरे घर में भाइयों में समानता रहे चौथे घर से माता से वैर पांचवें घर पुत्री से प्रेम छटे घर से शत्रु नष्ट हों सातवें घर से स्त्री रूपवती मिले आठवें घर जीर्ण होकर मरें नवें घर से धर्मात्मा और दशवें राज सम्मान ग्यारहवें घर से नीच लोगों से मेल रहे। बारहवें में खर्च रहै।

कुम्भ लग्न

कुम्भ लग्न का स्वामी भी शनि है यह मकर से ही मिलता जुलता रहता है सिर्फ नवें स्थान में यदि बली होकर बलवान अवस्था में बैठे तो यात्रा से लाभ उठावे।

मीन लग्न

इस का स्वामी बृहस्पति है यह सब बातों में ब्राह्मणत्व से मिलता जुलता है किसी अन्य वर्ण में हो तो ब्राह्मण के समान ही कार्य करे। चौथे घर में बलवान होकर बैठे तो पृथिवी से गढ़ा धन मिले अथवा माता का धन प्राप्त हो भूपत बने तथा सवारी चढ़ने को प्राप्त हो पांचवे घर से विद्या का अधिक ज्ञानी हो अल्पायु वाले पुत्रों का जन्म हो : छटे घर से शत्रु की हानि दूसरे घर से पिता के धन से वञ्चित तीसरे घर से भाइयों में मत भेद रहे सातवें से स्त्री पढ़ी लिखी मिले आठवें धर्मात्मा मौत हो, नवें से धर्मात्मा और दसवे से राज लाभ ग्यारह से एश्वर्यवान और बारहवें से धर्म में धन खर्च करे।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

चौथा अध्याय

चन्द्र वर्णन

चन्द्रमा के चैत्र, वैसाख, जेष्ट, आसाढ़ श्रावण, भाद्रपद अश्विन, कार्तिक, मार्गसिर, पूस, माघ और फाल्गुण मास हैं सूर्य के, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक धन, मकर, कुम्भ मीन यह बारह मास हैं सूर्य और चन्द्र का वर्ष बारह मासों में विभाजित है प्रत्येक मास के दो पक्ष हैं जिन को शुक्ल और कृष्ण पक्ष कहते हैं प्रत्येक पक्ष तिथियों पर बटा हुआ है जिन का पड़वा, दोज, तीज, चौथ, पंचमी, छट सत्तमी, अष्टमी, नवमी दसवीं एकादशी, द्वादशी, त्रियोदशी, चतुर्दशी कहते हैं कृष्ण पक्ष की पन्द्रहवीं को अमावश्या और शुक्ल पक्ष की को पूर्णमासी कहते हैं इन तिथियों के दो भेद हैं जिनको शुभ और अशुभ कहेंगे।

तिथियों के भेद

नन्दा, भद्रा, जया रक्ता पूर्ण यह पांच तिथियों के भेद हैं यह तिथियां प्रति पदा (पड़वा) से लेकर पंचमी तक अशुभ ६ से लेकर दशमी तक मध्यम फिर ग्याहरस से पन्द्रस (पूर्णमा) तक शुभ रहती हैं अमावश्या को मध्यम रहेगी। जैसे कि अमावश्या इन तिथियों में मध्यम रहती है चन्द्रमास का आरम्भ प्रतिपदा से होता है और पूर्णमासी पर समाप्ति होजाती है यह विचार केवल यू. पी में है इस के अतिरिक्त सूबा बंगाल और गुजरात में महीना अमावश्या को समाप्ति हो जाता है इसी लिये अमावश्या पर ३० अंक लिखने की प्रथा पत्रों में प्रचलित है।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

राशि और नक्षत्र जानना

जातक के नाम के प्रथमाक्षर से राशि और नक्षत्र का बिचार किया जाता है और नाम भी नक्षत्रों के अंशों से धरा जाता है जातक का नाम जिस नक्षत्र के जिस अंश में होता है उसी के अनुसार नाम रक्खा जाता है।

नाम राशि	नामाक्षर	नक्षत्र	नाम राशि	नामाक्षर	नक्षत्र
मेष,	चू चे चो ला	अश्वनी ४	तुला	रा री	चित्रा २
,, ,,	लि, लू, ले, लो	भरणी ४	,, ,,	रू रे रो ता	स्वांति ४
,, ,,	आ	कृतिका १	,, ,,	ती तू ते	विसाखा ३
वृष,	ई, उ, ए	कृतिका ३	वृश्चिक	तो	विसाखा १
,, ,,	ओ वा वी वू	रोहिणी ४	,, ,,	ना नी नू ने	अनुराधा ४
,, ,,	वे वो	मृगशिर २	,, ,,	नो या यी यू	ज्येष्ठा ४
मिथुन	का की	मृगशिर २	धन	ये यो भा भी	मूल ४
,, ,,	कु घ ङ छ	आद्रा ४	,, ,,	भू धा फा ढा	पूर्वाषाढ ४
,, ,,	के को हा	पुनर्वसू ३	,, ,,	भे	उत्तराषाढ १

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

नाम राशि	नामाक्षर	नक्षत्र	नाम राशि	नामाक्षर	नक्षत्र
कर्क	ही	पुनर्वसू १	मकर	भो जा जी	उत्तराषाढ ३
,, ,,	हु हे हो डा	पुष्य ४	,, ,,	खी खू खे खो	श्रावण ४
,, ,,	डी डू डे डो	श्लेषा ४	,, ,,	गा गी	धनिष्ठा २
सिंह	मा मी मू मे	मघा ४	कुम्भ	गू गे	धनिष्ठा २
,, ,,	मो टा टी टू	पूर्वा फालगुन४	,, ,,	गो सा सी सु	शतिविसाखा ४
,, ,,	टे	उत्तरा फालगुन१	,, ,,	से सो दा	पूर्वाभाद्र पद ३
कन्या	टो पा पी	उत्तरा फाल्गुन३	मीन	दी	पूर्वा भाद्रपद १
,, ,,	पू षा णा ठा	हस्ता ४	,, ,,	दू था झा ञ	उत्तर ।भाद्रपद४
,, ,,	पे पो	चित्रा २	,, ,,	दे दो चा ची	रेवती ४

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

नक्षत्रों की चाल

जिस प्रकार सूर्य चक्र बारह राशियों पर बटा हुआ है उसी प्रकार चन्द्र चक्र २७ भागों में बटा हुआ है इन्हीं को नक्षत्र कहते हैं इन नक्षत्रों में अन्तर बहुत कम है इसी लिये बराबर का मान लिया है। चन्द्रमा अपने चक्र को २७½ दिन में पूरा कर लेता है यही सूर्य की १२ राशियां हैं जो सूर्य के २९½ दिन के बराबर है अथवा यों समझिये कि चन्द्रमा की प्रति दिन की चाल का नाम नक्षत्र है। इन नक्षत्रो में से एसिया चीन और मिश्र वाले २८ मानते हैं परन्तु भारत वर्ष में २७ ही माने जाते हैं क्योंकि २८ वां नक्षत्र जो अभिजित है वह बहुत कम ठहरता है।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मुहूर्त वर्णन

चन्द्र विचार

एक राशि पर चन्द्रमा सबा दो दिन अर्थात १३५ घड़ी रहता है इन्हीं घड़ियों में आठों दिशाओं में रहता है जैसे उत्तर में १५ घड़ी दक्षण में इक्कीस पूर्व में सत्तरह पश्चिम में अठारह अग्निकोण १५ ईशान में चौदह नैऋत्य में सोलह बायव्य में उन्नीस मेष और सिंह तथा धन का चन्द्रमा पूरब में मिथुन कुम्भ तुला पश्चिम में कर्क मीन वृश्चिक उत्तर में बृष कन्या और मकर का दक्षिण में रहता है।

चन्द्र फल दूसरा

जन्म का कल्याण कारी दूसरा सम तीसरा सम्पत दाता चौथा कलह कारक पांचवां उत्तम सील छटा लाभ दायक सातवां सुख कारक आठवां मृत्यु कारक नवां और दसवां ग्यारहवां लाभ दायक बारहवां शोक दायक होता है।

नक्षत्रों में कार्य सिद्धि

अश्वनी नक्षत्र में वस्त्र पहनना और बाल वनवाना यज्ञोपवीत संस्कार भूषण बनबाना खेती करना श्रेष्ठ है।

भरणी—कुआ, बाबरी तालाव बनवाना गिरबी रखना।

कृतिका—मेंअस्त्र शस्त्र बनवाना लड़ाई लड़ना औषध खाना

रोहिणी—में वस्त्र आभूषण बिवाह उत्सव हाथी घोड़ा खरीदना और व्यापार करना श्रेष्ठ है।

सिद्ध योग देखना

परबा, छट और दसमी यदि शुक्रवार की आकर पड़े तो वो नन्दा तिथि कहलायेगी ये उत्तर योग है दौज सत्तमी और

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

द्वादसी बुद्धवार की आकर पड़े तो उसको भद्रायोग कहेंगे तीज, अष्टमी और चौदस मङ्गलवार की होतो जयायोग होगा चौथ नौमी तेरस शनिवार की होतो रक्ता पांचमी दसमी गुरुवार की होतो पूर्ण इसके विपरीत मृतयोग होता है। जैसे नन्दा सूर्यवारमें भद्रा सोमवार में जया बुद्धबार में रक्ता गुरुवार में पूर्ण शनिबार में मृतयोग होता है।

कुण्डली विचार

कुण्डली में बारह राशियों में जो ग्रह जहां पर स्थापित हुए हैं उन्ही के विचार से ज्योतिषी फल कहा करते हैं ज्योतिष में मुख्य कार्य इन्ही ग्रहों की चाल की गणित करना हैं।

कुण्डली का साखा सम्बत देखना

जिस राशि का शनि पड़ा हो उस को बर्तमान शनि राशि तक गिन कर २॥ गुना कर दो गुड़न फल गत वर्ष होगा। उसको वर्तमान साखेमें से घटादो कुंडलीका संवत साखा होगा

जन्म का महीना बताना

मेष राशि के सूर्य वाले का जन्म वैशाख का बृष का सूर्य हो तो ज्येष्ट का, मिथुन का आषाढ़, कर्क कासूर्य श्रावण सिंह का भादों कन्याका आश्वन तुला का कातिक बृश्चिकका अगहन धन का पूस, मकर का माघ, कुम्भ का फागुन और मीन का सूर्य हो तो चैत मास जानो।

पक्ष निकालना

जिस राशि पर सूर्य हो सात राशि के भीतर यदि चन्द्रमा पड़े तो शुक्ल पक्ष इस के विपरीतहो तो कृष्णपक्ष जानना चाहिये

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

जन्म तिथि बताना

जिस स्थान पर सूर्य हो वहां से चन्द्रमा तक २॥ गुना कर लो जन्म की तिथि निकल आयेगी।

पुरुष स्त्री की कुण्डली बताना

लग्न स्थान को छोड़ विषम स्थानों में यदि शनीचर बैठा हो और पुरुष ग्रह बलवान हो तो पुरुष की, इस के बिपरीत हो तो स्त्री की होती है।

जीवित मृतक की कुण्डली बताना

लग्न रधाङ्क और प्रश्नांक को जोड़ कर जहां अष्टम स्थान में शनि हो उस राशि से २॥ गुना करे और लग्नेश का भागदे समांश बचे तो मृतक की, विशमांश बचे तो जीवित कीजानो

प्रथम मृत्यु बताना

प्रायः स्त्री और पुरुषों में यह प्रश्न उत्पन्न हो जाता है कि प्रथम स्त्री मरेगी या पुरुष उस के निकालने की यह रीति है कि स्त्री पुरुष के नाम के अक्षरों को जोड़ कर उसका अठगुना करो फिर तीन का भाग दो यदि शेष दो बचें तो प्रथम स्त्री मरेगी अन्यथा पुरुष।

भाग्योदय

भाग्येश केन्द्र में बैठा हो और बली हो तो बाल्यावस्था में त्रकोण में उच्च का बैठा हो तो युवा अवस्था में, और जो स्वक्षेत्री (अपने घर में) अथवा मित्र के घर में बैठा हो तो बृद्धावस्था में भाग्य उदय होगा।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सन्तान होगी या नहीं

जिस की कुण्डली में वृश्चिक का बृहस्पति और शुक्र बैठा हो और बुध शनि लग्न में बैठे हों उस के संतान नहीं होगी जिस के लग्नेश को शनि और चन्द्र देखता हो अथवा लग्नेश का शत्रु लग्नेश में बैठा हो छटे अथवा दूसरे घर में सूर्य बैठा हो तौ भी उस के संतान न होगी जिस के बुध शुक्र और चन्द्रमा से दृष्टि शनि छटे घर में हो अथवा पाप ग्रह से दृष्टि युक्त शनि बैठा हो तब भी उसके संतान नहीं होगी।

मृत्यू ज्ञान

यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह युक्त वा दृष्टि होकर छटे आठवें घर में बैठा हो तो उसकी मृत्यू आठवें साल होगी। यदि शुभ अशुभ दोनौं के ग्रहों से युक्त और दृष्टि होकर छटे या आठवें घर में चन्द्रमा बैठा हो तो चौथे वर्ष उस की मृत्यु होगी जिस के छटे या आठवें ग्रह में शुभ ग्रह बैठे हों और बलवान होकर पापग्रह देखते हों तो उस की आयु एक मास की होगी जिस का लग्नेश पाप ग्रहों से पीडित होकर सप्तम घर में बैठा हो उसकी भी आयू एक मास की होगी जिस की कुण्डली में क्षीण चन्द्रमा लग्न या अष्टम घर में या केन्द्र एक चार सात दशमे कोई पाप ग्रह बैठा हो अथवा पाप ग्रहोंके बीचमें चन्द्रमासातमें आठमें चौथे घर में से किसी घरमें बैठा हो और लग्न सातवें आठवें घर में पाप गृह हो तो माता सहित उसकी मृत्यू होगी।

स्त्री जातक

स्त्रीयों के सौभाग्य का सप्तम घर है लग्न से शरीर का, आठवें घर से बिधवा होने का और पांचवे घर से सन्तान का विचार किया जाता है

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सौभाग्यवती लक्षण

लग्न से सातवें घर को दो शुभ ग्रह देखते हों अथवा शुभ बैठे हों तो वो सौभाग्यवती है

दुष्टा लक्षण

जिसके सप्तम घर को पाप ग्रह देखता हो वह चंचल नेत्रों वाली हो, पापग्रह देखते हो तो वह अधम, और तीन पापग्रह होतो वह महा दुष्टा होगी, सातवें घर में सूर्य हो वो क्रोधी, पति को छोड़ने वाली होती है। मंगल बैठा होतो विधवा शनि बैठा होतो वृद्धा और पाप ग्रह सप्तम ग्रह को देखते होतो पति से क्रोध करने वाली होगी।

व्यभिचारिणी लक्षण

जिस का लग्न और चन्द्रमा दोनों पाप ग्रह के बीच में हो और कोई शुभग्रह उसको देखता नहो तोवह व्यभिचारिणी होगी

जिस के सप्तम घर में तथा बारहवें घर में अथवा दोनों घर में से किसी एक घर में मंगल बैठा हो या सातवें घर में वृश्चिक और बारहवें घर में मेष राशि हो उस में पापग्रह सहित राहू बैठा हो तो वह दुष्ट मनुष्यों के साथ में रहकर व्यभिचारिणी हो जावेगी। यदि सातवें घर में कर्क राशि का सूर्य और मंगल बैठा हो तो धनहीन होकर व्यभिचारिणी होगी।

सन्तान विचार

पंचम स्थान में स्वामी के साथ चन्द्रमा होतो गर्भ रहेगा संतोन होगी अथवा लग्नेश लग्न में या लग्न का स्वामी और चन्द्रमा पांचवें घर में होतो शीघ्र संतान होगी

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लग्न का स्वामी अथवा पंचम स्थान का स्वामी पुरुष राशि में हो तो पुत्र अन्यथा कन्या होगी,चन्द्रमा पुरुष राशि पुरुष ग्रह के साथ बैठा होतो पुत्र, यदि चन्द्रमा दोपहर के बाद का कृष्णपक्षका अथवा सूर्य का हो तो कन्या होगी

लग्न का स्वामी लग्न में हो अथवा लग्न में चन्द्रमा हो या चन्द्रमा लग्न को देखता हो तो गर्भ है लग्नेश अथवा पंचमेश लग्न और पंचम को देखे तो गर्भ नहीं है। चन्द्रमा नीच या पाप गृह के साथ पंचम स्थान में हो अथवा पापगृह पंचम स्थान को देखे तो गर्भ गिर जावेगा।

लग्न बल दिन में होतो दिन में और रात में हो तो सन्तान रात में होगी आठवें घर में शनि सूर्य ५, ११, १०, राशि का हो तो स्त्री बांझ है। आठवें घर में शुक्र और बृहस्पति हो तो गर्भ को हानि पहुँचे। पंचम स्थान यदि पंचमेश होतो प्रश्न वाली साल गर्भ रहेगा यदि लग्नमें बृहस्पति या शुक्र आकर पड़ेतो वह स्त्री गर्भवती है। लग्नसे जितने घर दूर शुक्र हो उतने ही महीने का गर्भ है

जन्म नक्षत्र फल

अश्वनी नक्षत्र में जन्म होतो विद्वान भाग्यवान धनवान स्वरूपवान होगा भरणी में सत्यवादी, मृदुभाषी बुद्धमान, कृतिका वाला लोभी, हिंसक कंगाल, रोहिणी वाला धर्मात्मा दानी. मृगसिरा वाला, साहसी वीर, आद्रा वाला, अभिमानी मूर्ख,पुनर्वसुका विलासी भोगी,पुष्यवाला न्यायी शूरवीर,अश्लेषा वाला मासा हारी नीच धूर्त, दरिद्री, मघा वाला पुत्रवान पूर्वा फाल्गुणवाला उद्यमी कम ऊ उत्तरा फाल्गुणीका रुआबदारहस्त वाला मिथ्यावादी झगड़ालू शराबी, चित्रा बाला प्रेमी शीलवन्त

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

स्वांतिवाला,परोपकारी,विसाखावाला व्यभिचारी लड़ाका क्रोधी अनुराधा वाला प्रतिज्ञा बाला जेष्ट का मित्रों वाला मूल वाला माता पिताको दुखदाई पूर्वाषाढ़ स्वरूपवान पुत्रवान उत्तराषाढ़ वाला मोटा ताजी धनवान श्रवण बाला प्रसन्न चित्त धनिष्टा वाला गायक शतभिका बाला पर स्त्री गामी पूर्वा भाद्रपद राज सन्मान पाने वाला उत्तराभाद्रपद वाला शत्रुका नाशकर्त्ता रेवती वाला साधू यदि अभिजित नक्षत्र में जन्मलेतो राजाहोगा तथा कुलोदीपक होगा

किस आयु में संतान होगी

जिस कुन्डली में नीचे का होकर बृहस्पत या शुक्र बैठा हो बुध या सूर्य सम राश का होकर बैठा हो उसको पुत्र का सुख नहीं है। अथवा पाप ग्रहों से युक्त दृष्टि चन्द्रमा कर्क राशि का होकर बैठा हो और सूर्य को शनि देखता हो उसके साठ वर्ष की उम्र में पुत्र होगा जिसके लग्न में पाप ग्रह हो और पाप ग्रहका ही लग्न हो सूर्य वृश्चिक होकर बैठा हो मिथुन रास का मंगल हो ऐसा योग पड़ने से तीस वर्ष बाद सन्तान होगी

पुरुष सामुद्रिक

अनामिका उगली की जड़ में जो रेखा होती है उसे पुन्या नायका रेखा कहते हैं मध्यमा उंगली के नीचे से लेकर पौंचे के समीप तक खड़ी रेखा को ऊर्ध रेखा कहते हैं हर रेखा यदि खन्डित हो जब तो दुख देती है अपूर्ण हो तो थोड़ा फल देती है पूर्ण होतो राज्यफल देती है पतली होतो क्षीण फल देती है जिस के अंगूठे के मध्य में जौ का चिन्ह होता है वो बड़ा यशस्वी अनेक भूषण स्त्री प्राप्त गहने और अनेक प्रकार के द्रव्यों से

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

संयुक्त पुरुष होता है जिसके दक्षिण हस्त में मछली छत्र अथवा हाथी तालाब अंकुश बीड़ा इनमें से कोई चिन्ह हो अथवा मूसल पर्वत खडग हल पुष्य इनमें से कोई चिन्ह होतो धनवान होगा।

जिस पुरुष के दाहिने हाथ में घोड़ा कमल धनुष चक्र ध्वजा आसन और डोली अथवा घड़ा खम्ब मृदंग वृक्ष चिन्ह हो तो धनवान होगा। जिसके हाथ की हथेली पतली हो वह पंडित होगा जिसकी हथेली में तिलका चिन्ह होता है वो धनी होता है

स्त्री सामुद्रिक

जिस स्त्रीकी हथेली कोमल और बराबर हो वहधर्मात्मा होगी आचार्योंने स्त्रीयोंका बांया और पुरुष का दाहिना हाथ देखने का नियम रक्खा है उसी के अनुसार शुभाशुभ फल कहते हैं।

हस्त उंगली लक्षण

जिसका अंगूठा और अंगूठे के पास की दोनों उंगली कमल की कली के सदृश हो वो अनेक भोगों को भोगने वाली होती है

हथेली लक्षण

जिसकी हथेली निरमल ऊपर को उठी हुई हो वो कामवती, जिसकी हथेली की रेखायें साफ हो वो कल्यान कारी, जिसके हाथ में रेखायें न हों वो अमंगल कारी, बिलकुल रेखायें न हों वो दरिद्री अथवा बहु रेखायें वाली दरिद्रणी होती है।

हथेली की पीठ के लक्षण

जिस के हाथ का पिछला भाग नसों युक्त हो वह दरिद्री ऊंचा अधिक नसें न हों वह परिश्रमी यदि अधिक रोम मांस रहित हो तो विधवा होगी।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

हस्त रेखा लक्षण

जिसकी हथेली अधिक गहरी हो और रंग लाल और कोमल हो वह सुभ कारी, रेखायें गोल हो तो रति सुख प्राप्त होता है। मछली की रेखा हो तो सौभाग्यवती और पुत्र का सुख भोगती है। यदि सांतिये की रेखा आकर पड़े तो पुत्रवान होगी जिस की हथेली में कमल का चिन्ह हो तो वह राज रानी, छत्र कछुआ अथवा शंख इन में से कोई चिन्ह हो तो पतिव्रता।

जिसकी हथेली में तुला माला आभूषण के चिन्ह हों तो वह धनवान वैश्य की स्त्री होगी, जिसकी हथेली में हाथी घोड़ा मन्दिर वृक्ष की रेखायें हों वो बुद्धिवान होगी जिसकी हथेली में अंकुश चवर अथवा धनुष की रेखा हो तो वह राज पतिनी होगी जिसकी हथेली में गाड़ी की रेखा हो तो वह किसी व्यौपारी की स्त्री होगी।

जिस के अंगूठा के मूल में कनिष्ठा उंगली तक रेखा गईहो तो वह विधवा होगी जिसकी हथेली में खडग गदा भाला मृदंग सूल हिरन इन में से कोई रेखा हो वह सर्व समय धनवान होती है जिसकी हथेली में वृष मेंढक बीछू स्यार सर्प गधा बटेर टींडी बिल्ली इन में से कोई रेखा हो तो वह स्त्री कलह और रोगिनी हो जाती है। जिसका अंगूठा सरल कोमल और गोल हो और उगली क्रम से एक दूसरे से छोटी हो तथा लंबी और गोल हो रोम युक्त चपटी व छोटे पोरुए हों तथा छोटी हों तो वह रोगिनी रहेगी

नख लक्षण

जिस के नख शंख या सीप के समान नीचे गढ्डे वाले हों वो शुभ, सफेद टेड़े और रूखे अशुभ होते हैं जिस के नखों में सफेद रङ्ग के चिन्ह हों वह कामबती होती है।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

पांचवां अध्याय

प्रश्न विचार

प्रश्न कर्त्ता के समय की लग्न निकाल कर प्रथम कुन्डली बनाना चाहिये। जिस समय प्रश्न किया गया है ठीक उसी समय की घड़ी पल-पंचांग में देख कर इष्ट निकाल लो।

कार्य सिद्धि

जिस घर का स्वामी उसी घर में आकर पड़े अथवा उसको देखे तो कार्य सिद्ध होगा या मित्र के गृह पड़े या देखें तो कार्य सिद्ध हैं अथवा वृष कर्क कन्या और मीन अपने अंश के लग्न में आकर पड़ी हो तोभी कार्य सिद्धि हो जावेगा। लग्नेश कार्य को देखे तो भी सिद्धि होने का योग है। यदि लग्न का स्वामी कार्य के घर वाले स्वामी को देखे तो बिगड़ा हुआ कार्य भी सिद्धि हो। यदि लग्नेश को चन्द्रमा देखे अथवा कार्य के घर को चन्द्रमा देखे तोभी कार्य सिद्धि होगा, लग्न तथा अष्टम स्थान के स्वामी अष्टम घर में द्वेश कर्ण में होतो कार्य सिद्धि जानो ग्यारहवें घर का स्वामी यदि लग्न में हो या देखता हो तोभी कार्य वनजावेगो यदि चन्द्र देखे तो अत्यन्त लाभ हो। चन्द्रमा यदि १२।६।८ घर देखे तो भी कार्य सिद्धिहो।

मध्यम कार्य बनने का योग

लग्न का स्वामी लग्न को न देखे और शुभ ग्रह आकर पड़ें तो चौथाई कार्य बनेगा अगर लग्न के स्वामी को

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

शुभ ग्रह देखें तो आधा कार्य सिद्धि हो यदि एक शुभ ग्रह लग्नेश को देखता हो तो $\frac{1}{3}$ कार्य सिद्धि हो।

कार्य सिद्धि न होना

लग्नेश में पाप ग्रह हो अथवा पाप ग्रह देखते हों तो कार्य न बनेगा अगर लग्न का स्वामी कार्य के लग्न को न देखे तोभी कार्य न बनेगा। ग्यारहवें घर का स्वामी और आठवें घर का स्वामी एक घर में होंतो कार्य न बनेगा। लग्नेश छटे घर में पड़े तो भी कार्य सिद्धि न होगा।

पृथ्वी में गढ़ा धन देखना

लग्नेश चन्द्र का और धन का स्वामी एक स्थान पर हों अथवा उन को शुभ ग्रह देखता हो तो धन अवश्य मिले विरुद्धता पाई जावे तो थोड़ा धन मिले। यदि धन के स्वामी और लग्न में पाप ग्रह होतो कष्ट हो और धनेश अपने चौथे घर में होतो बहुत धन मिले यदि शुभ ग्रह के साथ साथ बैठे या शुभ ग्रह देखताहो तो शीघ्र धन मिले।

यदि आठवें घर में मंगल पड़े धनेश को शत्रु देखे तो धन दूसरे स्थान पर है। धनेश के साथ राहू और आठवें में सूर्य होतो धन न मिलेगा। चौथे आठवें घर में चन्द्र वृहस्पति शुक्र होंतो धन अवश्य मिले अथवा चौथे या दसवें घर को चन्द्रमा देखे तो धन मिले। लग्न में राहू आठवें में सूर्य होतो नहीं मिले।

चन्द्रमा लग्न दसवे घर मेंहो अथवा चन्द्र शुक्र या वृहस्पति अथवा बुध के साथ होतो गढ़ा हुआ धन अवश्य मिले।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

गढ़े धन का स्थान बताना

यदि लग्न में प्रथम देशकर्ण $\frac{1}{3}$ हिस्से में होतो घर के द्वार के पास, दूसरे में होतो घर के बीच में, यदि तीसरे घर में होतो घर के पीछे है

चोरी के प्रश्न

पहिले लग्न का नवांश निकाल ले उसके स्वामी के विचार से जिन्स बताई जाती है ऐसे प्रश्नों का संबंध छटे घर से है। लग्नेश से चोर की जात और रंग रूप और आयु देखी जाती है प्रश्न लग्न से स्थान तथा दिशा देखी जाती है।

चोरी का माल बताना

नवांश का स्वामी सूर्य हो तो पीतल, तांबे संबन्धी गहने इत्यादि की चोरी हुई है। चन्द्रमा हो तो चांदी रुपया मोती इत्यादि श्वेत वस्तु मंगल हो तो मूँगा गेंहूँ हथियार इत्यादि लाल वस्तुयें बुद्ध हो तो जस्ता इत्यादि खेती की पैदावार या कपड़ा गुरु हो तो सोना अशर्फी इत्यादि पीली चीजें शुक्र हो तो श्वेत वस्तु शनि हो तो काली वस्तु लोहा भैंसा बकरी इत्यादि।

चोर के रंग और नाम का अनुमान

प्रश्न समय जिस नक्षत्र का जो चरण हो उस के अनुसार नाम का प्रथमाक्षर देख कर नाम का पहला अक्षर बतादो जैसे मेख लग्न में अश्वनी नक्षत्र का पहिला चरण आकर के पड़ता है तो उस पर "चू" जैसे चूरा मणि इसी का अनुमान लगा कर नाम का पहिला अक्षर बतलाना चाहिये।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

माल का मिलना न मिलना

यदि १-५-७-९-११ घरों में से किसी घर में शुक्र या बृहस्पति हो तो मिल जावेगा लग्नेश ग्यारहवें घर में और उसका स्वामी लग्न में हो तोभी माल मिल जावेगा। यदि मघा नक्षत्र से उत्तराफाल्गुनी तक कोई वस्तु गई हो तो मिल जावेगी अगर हस्त से धनिष्ठा तक गई हो तो लेने वाला देगा नहीं परन्तु पता चल जावेगा। अगर शतभिषासे भरणी तक गई है तो घर में है तलाश करो अगर कृतिकासे अश्लेषा तक गईहै तो नहीं मिलेगी।

मुकद्दमें की हार जीत

सातवें घर के स्वामी से यदि लग्न का स्वामी बलवान है तो जीत अवश्य हो यदि लग्न में शनि मंगल,सूर्य बलीहो तो हारहो

प्रेम का से मिलाप होगा या नहीं

लग्नेश चन्द्रमा के साथ हो अथवा लग्नेश बली होकर सातवें घर में बैठे या सप्तमस्थान शुक्र बुध चन्द्रमा साथ में हो तो प्रेमी और प्रेमका का मिलाप हो जावेगा।

बिछुड़े का मिलाप

इस में तीसरे घर से सातवां घर देखा जाता है यदि उस में चर लग्न १-४-७-१० तथा बुध बृहस्पति और बलवान चन्द्रमा हो या बली चंद्र देखता हो तो शीघ्र मिलाप होगा,।

लाभहानि बिचार

लाभेश और लग्नेश दोनों एक स्थान पर हों तो लाभ हो। यदि लग्नेश ग्यारवें घर में हो तो लाभ है लग्न में लग्नेश लाभ कारो है। यदि लग्नेश में हो तो अधिक लाभ हो बुध सूर्य थोड़ा लाभ करेंगे। लग्नेश और लाभेश निर्बल होंतो हानि अथवा विरुद्ध हो तोभी हानि पाप ग्रह देखते हों तोभी हानि।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मूक प्रश्न

प्रश्न दो प्रकार के होते हैं एक साधारण और दूसरे मूक साधारण प्रश्न में प्रश्नकर्त्ता अपने मन का भाव बता देता है और मूक प्रश्न में किसी प्रकार का भाव नहीं बताया जाता केवल किसी पुष्प या फल को लेकर चुप होजाता है उसी पर कुन्डली बना कर उसके मन का सब हाल बताना पड़ता है मूक प्रश्न में केवल तीन बातों का ध्यान रक्खे एक तो प्रश्नकर्त्ता से कोई कड़ी बात न कहे दूसरे प्रश्न का उत्तर सदैव धातु जीव और मूल कहकर छोड़ दे जिनका अभिप्राय इस प्रकार से है धातु-में जेवर सोना चांदी आदि सांसारिक सबही पदार्थ आजाते हैं। जीव-में दुख सुख पशु पक्षी इत्यादि शरीर सम्बन्धी सब बातें आजाती हैं। मूल में ऊपरी बातें बनास्पति वृक्षादि सम्मिलित है।

मूक प्रश्न बताने की रीति

प्रश्न समय की कुन्डली बनाकर देखे कि उस समय किस आकार की कुन्डली बनी है यदि लग्नेश अथवा चन्द्रमा लग्न में आकर पड़े अथवा चन्द्रमा उच्च का हो कर पाचवें नवें या सातवें घर में बैठे तथा लग्न को देखे तो धातु सम्बन्धी प्रश्न है। इसके विपरीत चन्द्रमा शत्रु घर में कर लग्न को न देखे तो जीव सम्बन्धी। यदि लग्नेश निज घर का न हो और वृष कर्क लग्न को छोड़ चन्द्रमा किसी और लग्न में बैठे तो मूल सम्बन्धी प्रश्न है।

मूक प्रश्न की दूसरी रीति

यह प्रश्न नवांश द्वारा बताया जाता है लग्न के नवें भाग को नवांश कहते हैं जैसे लग्न की आधी घड़ी बीत गई हो तो

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

वह लग्न का पहिला नवांश है। प्रत्येक लग्न ३० घड़ी की होती है इसलिये लग्न का नवांश ३ अंश २० पल का हुआ राशि दो प्रकार की होती हैं एक सम दूसरी विषम जिन में बृष कर्क कन्या, बृश्चिक, मकर मीन सम राशि है मेष की विषम हैं। इनमें से सम राशियों के एक एक अंश को " त्रिशांश " कहते हैं। अर्थात् राशि का तीसवां भाग एक अन्श का त्रिशांश हुआ और विषम राशियों में पांच से पांच आठ, सात और पांच अन्सों के क्रम से मंगल, शनि बृहस्पति, बुध, और शुक्र के त्रिशांश क्रमानुसार होते हैं जैसे विषम राशि में मेष, मिथुन सिंह तुला धन और कुम्भ में प्रथम पांच अन्श तक मंगल का फिर ६ अंश से १० अंश तक शनि का दस के बाद अठारह अंश तक बृहस्पति का फिर पच्चीस अंश तक बुध का और ३० अंश बीतेतक शुक्रका त्रिशांश रहता है इसके बिपरीति सम राशिमें प्रथमान्श शुक्रका फिर बारह अंश तक बृहस्पति पच्चीस अंश तक शनि और फिर तीस अंश तक मंगल का त्रिशाँश रहता है

नवांश चक्र

भाग	१	२	३	४	५	६	७	८	९
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

विषम त्रिशांश चक्र

गृह	मं	श	बृ	बु	शु
अंश	५	५	८	७	५
कला	५	१०	१८	२५	३०

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सम राशि चक्र

गृह	शु	बु	बृ	श	मं
अंश	५	७	८	५	५
कला	५	१२	२०	२५	३०

द्रेष्काण

नवांश त्रिशांश द्वादशान्श तथा द्रेशकाण त्र्यादि राशियों के भाग हैं क्योंकि लग्नें शीघ्रतया अपना फल बदल देती है इसी कारण आचार्यों ने राशियों को भागों में बांट दिया है जिससे फल सबका ठीक बैठे। देष्काण में प्रत्येक राशि के तीन भाग किये हैं प्रत्येक भाग को द्रेष्काण कहते हैं। हर एक भाग १० अंश का माना है जैसे पहिला भाग १ से १० तक दूसरा ११ से २० तक और तीसरा २१ से तीस तक का हुआ एक लग्न तीन चार पाँच अथवा ५$\frac{1}{2}$ घड़ी की होती है इतने ही कम काल में प्रत्येक राशि अपना शुभाशुभ फल दिखा देती है। ज्योतिषियों को अच्छी तरह अंशों को विचार कर फल कहना चाहिये क्यों कि प्रत्येक जीवधारी को मिनट २ पर दुख सुख भोगना पडता है।

नवांशफल

नवांश चक्र में मेष का पांचवां नवांश सिंह का है जिस का स्वामी सूर्य हैं। जन्म कुन्डली में यदि मेष लग्न के अंतर गति पांचवां नवांश होतो उस मनुष्य की प्रकृति तेज़ गौराङ्ग होनी चाहिये। इसी प्रकार प्रश्न समय में देखा जाता है जिस लग्न का जैसा नवांश हो और उनका जो स्वामी हो उसीके अनुसार फल कहे जैसे धन के तीसरे नवांश अककका प्रश्न है

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

तो फल उसका अशुभ होगा। यदि वृष के सातवें वृश्चिक नवांश का प्रश्न है जिस का स्वामी मंगल है उसी के अनुसार फल कहे।

चक्र कुण्डली प्रश्नोत्तर

पहिले घरका प्रश्न शरीर संबंधी दूसरे घरका धन संबंधी तीसरे घरका स्वामी आठवें को देखे तो भाई बीमार हैं छटे घर में तीसरे का स्वामी बैठे तो शत्रुओं से कष्ट हो. चौथा घर माता का है इससे पृथ्वी सम्बन्धी विचार होता है पांचवें घर से गर्भ का विचार किया जाता है छटे घर से चोरी खोई हुई वस्तु संग्राममें विजय पराजय तथा फेल पास का विचार होता है सातवें से विवाह बिचार साझा सट्टे का आना और आठवें से रोग सम्बधी बातें नवें से यात्रा संबंधी प्रश्नों का उत्तर दसवें से राज्य संबंधी बातें ग्यारवें से लाभ हानि तथा बारहवें से खर्च देखा जाता है।

गुप्त प्रश्न बताना

नवाँशे में प्रत्येक लग्न के नौ भाग किये हैं। जिस में प्रत्येक लग्न चार घड़ी ३० पल की होती है इस हिसाब से एक भाग आधी घड़ी (३० पल) का हुआ यदि किसी लग्न की आधी घड़ी बीती होवे तो उस का पहिला भाग हुआ उस समय जो प्रश्न गुप्त रीति से किया जाय कि मेरा क्या प्रश्न है तो कहो कि धातु संबंधी तेरा प्रश्न है। इस के बाद पूरी एक घड़ी होगी उस समय का प्रश्न जीव संबंधी होगा तथा डेढ़ घड़ी पर मूल प्रश्न कहेंगे।

———

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मूक कुन्डली प्रश्न

नवाँश द्वारा कुण्डली में जब धातु जीव और मूलका विचार होजाता है तब फिर आगे का फल कहते हैं पहिले और बारहवें घरके स्वामियों में जो बलवान हों और वह जिस घरमें जाकर पडे उसी घर का प्रश्न जानो।

उदाहरण

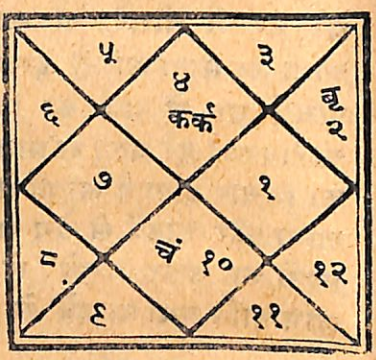

जैसे किसी प्रश्न कर्ताने पूँछा कि मेरे मनमें क्या है उस घड़ी पर कर्क राशि का नवांश देखा तो कर्क उसके ग्यारहवें स्थान बृष है जो लाभ के स्थान कर्क राशि का स्वामी चन्द्र है जो सातवें अर्थात् स्त्रीके घरमें बैठाहै और लग्न को पूरी दृष्टि से देख रहा है इसलिये उसका प्रश्न स्त्री संबंधी है (बिवाह चाहता है) यदि चन्द्रमा पांचवें स्थान हो तो उसका प्रश्न सन्तान संबंधी है सन्तान कब होगी)

इम्तहान में पास फेल होना

पांचवें स्थान से सन्तान व विद्या दौनों का विचार किया जाता है वहाँ ज्योतिषी की बुद्धि पर निर्भर है यदि कोई युवा या युवती सौभाग्यवतीका प्रश्न हो और पाँचवेंस्थान कर्क सात्र बनकर चन्द्र पड़े तो सन्तान का प्रश्न है इसी प्रकार यदि कोई विद्यार्थी प्रश्न करे और उपरोक्त कुन्डली के अनुसार चन्द्रमा पांचवें स्थान आकर पड़े तथा बलवान हो और मित्र गृह उस को देखते हों तो पास होगा।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मेष लग्न का पहिला भाग १ घड़ी ११ पल से १०अन्श तक का होता है जिसका स्वामी मङ्गल है फल उसका तीव्र है तथा दूसरे भागका स्वामी सूर्य है उसका फल तीव्र है तीसरे का स्वामी शुक्र है उसका फल शीतप्रद है वृष राशि का १ घड़ी २२ पलतक २० अन्श जाते हैं जिसके पहिले भाग का स्वामी बुध है यह शुभ तथा दूसरे का चन्द्रमा यह भी शुभ है और तीसरे का शनि यह अशुभ है। मिथुन राशि के १ घड़ी ४० पल तथा २० अंश होते हैं जिसके पहिले अन्श का स्वामी गुरु यह शुभ दूसरे का मङ्गल यह शुभ तथा तीसरे का सूर्य यह सम है। कर्क राशि १ घड़ी ५५ पल पर २० अन्श होते हैं इसके पहिले भाग का स्वामी शुक्र है दूसरे का बुध और तीसरे का चन्द्र है फल जिनका अच्छा है सिंह राशि का पहिला भाग १ घड़ी ५७ पर है स्वामी जिसका शनि है अशुभ फल देता है दूसरे लग्न का स्वामी गुरु है फल इसका शुभ है तीसरे का मङ्गल है इसका फल अशुभ है कन्या १ घड़ी ५४ पल पहिले भाग का है स्वामी इसका सूर्य है सम फल देता है दूसरे का स्वामी शुक्र और तीसरे का बुध है फल दोनों का शुभ है तुला राशि में १घड़ी ५४ पल का पहिला चरण होता है जिसका स्वामी चन्द्र शुभ फल दायक और दूसरे का शनि जिसका फल अशुभ तथा यीसरे का गुरु इसका फल शुभ है बृश्चिक १ घड़ी ५७ पल का पहिला चरण जिसका स्वामी मङ्गल तेज प्रकृतिवान है दूसरे का स्वामी सूर्य है सो सम है और तीसरे का शुक्र है यह शुभ होता है धन पहिला भाग १ घड़ी ५५ पल का स्वामी जिसका बुध शुभ है दूसरे भाग का चन्द्रमा है यह भी शुभ तीसरे का शनि यह अशुभ है स्थाना भाव के कारण समस्त राशियों का वर्णन नहीं होसका इस से आगे ताजक नीलकण्ठी हमारे यहां से । गाकर देखो।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लग्न का नवांशचक्र स्वामियों सहित

राशि	मेष		वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुल		वृश्चिक		धन		मकर		कुम्भ		मीन	
नवांशक	नवांश	स्वामी	नवांश	स्वामी	नवांश	स्वामी	नवांश	स्वामी	नवांश	स्वामी	नवांश	स्वामी	नवांश	स्वामी	नवांश	स्वामी	नवांश	स्वामी	नवांश	स्वामी	नवांश	स्वामी	नवांश	स्वामी
१	मेष	मं.	मक	श	तुल	शु	कर्क	चं	मेष	मं.	मक	श	तुल	श	कर्क	चं	मेष	मं	मक	श	तुल	श	कर्क	च
२	वृष	शु	कु	श.	वृश्चि	म	सिंह	सू	वृष	श.	कु०	श	वृ०	मं	सिंह	सू	वृष	शु	कु.	श	वृ०	मं	सिंह	सू
३	मिथु	बु	मीन	बृ	धन	बृ	कन्य	बु.	मिथु	बु	मीन	बृ०	धन	बृ०	कन्य	बु	मिथु	बु	मीन	बृ०	धन	बृ०	कन्य	बु
४	कर्क	च	मेष	म	मक	श.	तुल	शु	कर्क	चं.	मेष	मं	मक	श	तुल	श	कर्क	च	मेष	मं	मक	श	तुल	श
५	सिंह	सू	वृष	शु.	कु.	श.	वृ.	मं	सिंह	सू	वृष	श	कु	श	वृ०	मं	सिंह	सू	वृष	शु	कु०	श	वृ०	वृ०
६	कन्य	बु.	मिथु	बु	मीन	बृ०	धन	बृ०	कन्य	बु	मिथु	बु	मीन	बृ०	धन	बृ०	कन्य	बु	मिथु	बु	मीन	बृ०	धन	मं
७	तुल	शु	कर्क	चं	मेष	मं.	मक	श	तुल	श	कर्क	चं	मेष	मं	मक	श	तुल	श	कर्क	चं	मेष	मं	मक	श
८	वृश्चि	मं	सिंह	सू	वृष	शु	कु	श	वृ०	मं	सिंह	सू	वृष	श	कु	श	वृ०	मं	सिंह	सू	वृष	शु	कु०	श
९	धन	बृ.	कन्य	बु	मिथु	बु	मीन	बृ०	धन	बृ०	कन्य	बु	मिथु	बु	मीन	बृ०	धन	बृ०	कन्य	बु	मिथु	बृ०	मीन	बृ०

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे के मन के भाव की पहचान

बलवान होकर लाभेश जिस घर में पड़े उसीका प्रश्न जानो लग्न के नवाँश का स्वामी बलवान हो जिस घर में पड़े उसी का प्रश्न जानो यदि लग्न का नवांश लग्न में होतो शरीर संबंधी दूसरेमें होतो धन तीसरेमें भाई बहिन इत्यादिका जानों लग्न चर राशि १।४।७।१० वीं हो और लग्नेश चर नवांश १०।११। १२। वें तो यात्रा का प्रश्न है यदि ७।८।९ वें घर में स्वामी बलवान होकर बैठे तो यात्री के लौट आने का प्रश्न समझो।

तेजी मन्दी

जिस वस्तु की तेज़ी मन्दी निकालनी हो उस वस्तु के अंको को जोड़ कर दो का भाग दो जो शेष बचे उस को लग्न मान कुन्डली बनावे लग्न का स्वामी यदि सातवें, ग्यारहवें घर में पड़े तो लाभ लग्न पांचवां नवां साधारण बारहवें से हानि छटे से चोरी जानों आठवें से रोगी होकर हानि उठावें चौथा साधारण दूसरे से कम लाभ तीसरे से साधारण लाभ हो परन्तु अन्य मनुष्य लेजावे।

तेजी मन्दी का ज्ञान चन्द्रमा और सक्रान्त से भी किया जाता है चन्द्रमास के मानने वाले जिस दिन चन्द्र दर्शन होता है उसी दिन एक मास की तेज़ी मन्दी का ज्ञान करलेते हैं। यदि चन्द्रमा की दोनों नोक बराबर होतो जिन्से मन्दी रहे यदि चन्द्रमा तिरछा निकले और ऊपर की नोंक अधिक निकलती हुई दिखाई दे तो तेज़ी हो नीचे की नोक अधिक होतो मन्दा रहे दोनों नोकें बराबर होतो समान्य भाव जानों।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सक्रान्तफल

मेष संक्रान्तफल

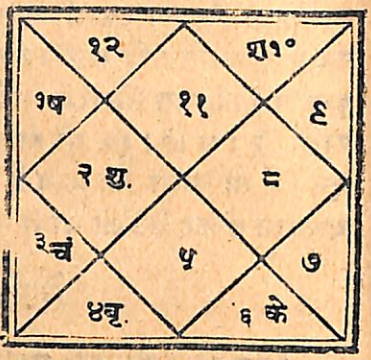

मकर संक्रान्तका प्रवेश यदि १५ महूरत आद्रा नक्षत्र में १५ घड़ी ५५ पल तक होतो गैहूँ चना मन्दा मूँग मोठ ज्वार मक्का साधारण महीने के अन्त में कुछ तेज़ी होगी गुड़ शुक्कर खांड शहद लाल मिर्च मसूर लाख मजीट सुर्ख चन्दन सुर्ख रंग इत्यादि लाल वस्तुएँ तेज़हों रोग़नदार (तेल देने वाली चीज़े) मन्दी रहें स्वेत बस्तु सन रुई इत्यादि तेज़ हों अत्तारों और पंसारियोंका सामान औषधियाँ तेज़हों तम्बाकू लकड़ी कोयला इत्यदि तेज़ ववाई रोगों के फैलने काभी भय है ।

बृष संक्रान्त

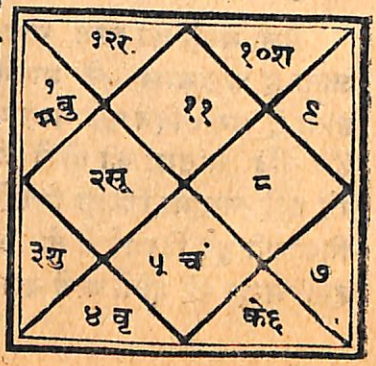

बृष संक्रात यदि मघा नक्षत्र में ३० मुहूर्ती १७ घड़ी ४ पल तक प्रवेश करे तो मास के आरम्भमें गैहूँ चनाका भाव सम रहे बाद में तेज़ी हो ज्वार बाजरा मक्का मोठ तेज़रहे गुड़ शक्कर खांड तिल तेल अलसी सरसों इत्यादि तेज़ कपास रुई घी तेज़ चौपाये तेज़ रहें ।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मिथुनसंक्रान्त

यदि मिथुन संक्रान्त ३३ घड़ी २३ पल ३० महूर्ति प्रवेश करे और चित्रा नक्षत्र मंगल बार का होतो गैहूँ चना तेज रहे मूँग खांस ज्वार बाजराभी तेज़ रहै लाल वस्तु और तेल काले पदार्थ तेज हों रुई कपास घी खांड भी तेज रहे सोना चांदी तांबा जस्ता मंदा रहे।

कर्क संक्रान्ति

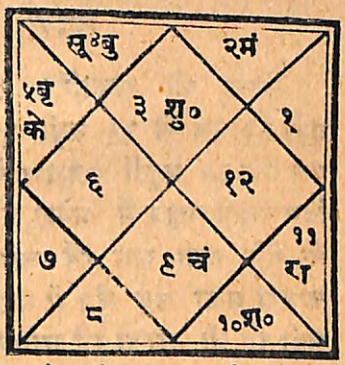

कर्क संक्रान्ति यदि १७ घड़ी २२ पल के बाद ३० महु र्ती पर प्रवेश हो और शुक्र के दिन मूल नक्षत्र पड़े तो गैहूँ और चना तेज हों छोटे अनाज ज्वार बाजरा भी सस्ता होगा गुड़ शक्कर खांड तेज हो रोगन दार चीजें जैसे अलसी सरसों मन्दे रहें श्वेत वस्तु दूध दही घृत तेज हो तथा रुई कपास सन सूतीवस्त्र तेज हों चौपाए सस्ते रहैं।

यदि आप मैस्मरेज्म द्वारा गुप्त बातों का हाल जानना और मृतक मित्रों से बात करना चाहते हैं तो मैस्मरेज्म विद्या पुस्तक १।) रुपया में गुलज़ार कम्पनी अलीगढ़ से मगाओ।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सिंह संक्रान्ति

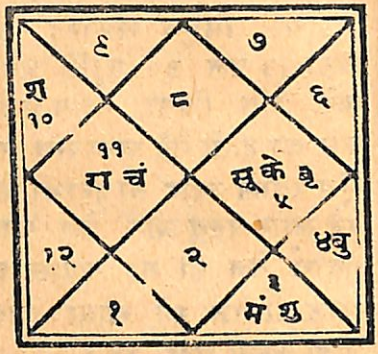

७ घड़ी ३६ पल के बाद ३० महूर्ती धनिष्ठा नक्षत्र में मंगलवार के दिन प्रवेश करे तो चना और गेंहूँ सम रहैं आगे के महीने में तेजी हो। मूँग मोठ ज्वार बाजरा मक्का उर्दके भाव में घटाबढ़ी रहै गुड़ शक्कर शहद लालमिर्च चंदन लाल वस्तुएं तेज हों रोगनदार चीजें तिल अलसी सरसों तेज रहै श्वेत वस्तु घी दूध किसी प्रकार सस्ते हो जावेंगे चौपाये चारा सस्ता रहेगा तम्बाकू तेज होगा।

कन्या संक्रान्ति

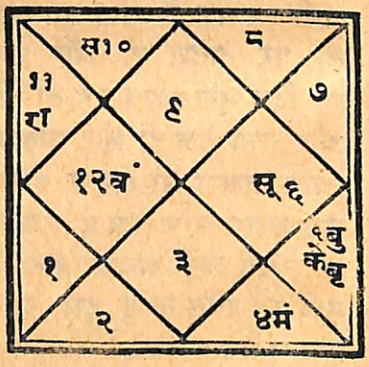

कन्या की संक्रान्ति २३ घड़ी ३१ पल से ३६ घड़ी ३१ पल तक ३० महूर्ती शुक्रवार के दिन रेवती नक्षत्र में प्रवेश करे तो गेंहूँ चना सम रहैं ज्वार बाजरा मक्का उर्द मूँग में घटा बढ़ी रहे घी सस्ता रहै चावल तेज तेल सरसों अलसी नारियल कालीमिर्च जीरा स्याह रंग की चीजें तेज हों तथा लालमिर्च लाल रङ्ग और लालरङ्ग कीवस्तु तेज रहैंगी सनलूत जस्ता कलई चांदी रुई कपास सस्ता लोहा तांवा तेल तम्बाकू लकड़ी चारा भूसा सम रहैंगा।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

तुल संक्रान्ति

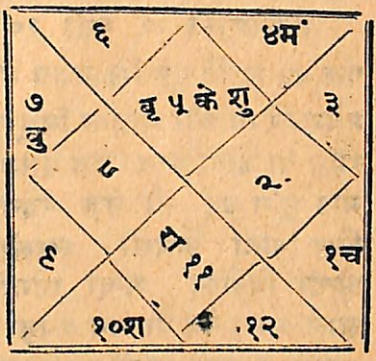

यदि तुला राशि की संक्रांत भरणी नक्षत्र पर ३० घड़ी २३ पल पर प्रवेश करे और चन्द्रमा मेघ लग्न का हो अन्त तेज़ हो परन्तु मोठ मूंग ज्वार बाजरा मक्का इत्यादि छोटा अन्न सस्त रहेगा तेल पदार्थ बिनौला अलसी सरसों पोस्त दाना अन्डी तेज होगी सूत कपड़ा सन कपास रुई तेज रहेंगे। सोना चाँदी जस्ता मूंगा तांवा लोहाघृत तेज गुड़ शकर चावल खांड़ तेज ऊनी रेशमी व लाल वस्त्र लाल रंग तेज़ रहेंगे।

बृश्चिक संक्रान्त

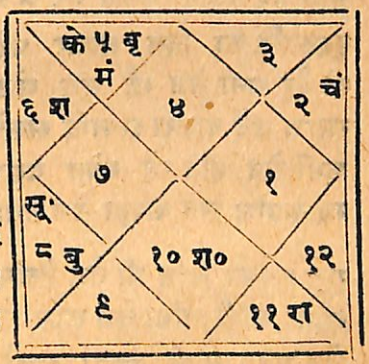

बृश्चिक संक्रान्त दोपहर के बाद मिगीसरा नक्षत्र में ३० महूर्ति प्रवेश करे तो गैहूँ चनां तेज़ हों ज्वार बाजरा मक्का में घटा बढी रहेंगी घी खांड रुई कपास का सम भाव रहे गुड़ शक्कर लाल मिर्च शहद सुर्ख चन्दन मसूर तांबा तेज रहें तैल पदार्थ अलसी सरसों अन्डी विनौला का भाव शुरू मास में तेज़ रहकर अन्त में सस्ता होजावेगा।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

धनसन्क्रान्त

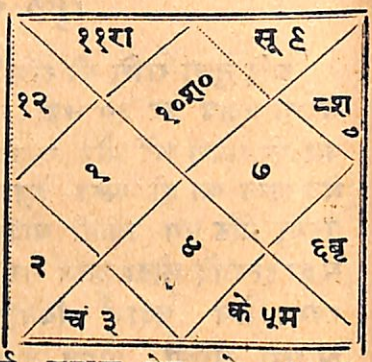

धनसंक्रान्त २६ घड़ी १० पल ४५ महूर्ति पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेशकरे तो और चन्द्रमा मिथुन राशि पर होतो अन्न तेज़ होगा मोठ मूंग उर्द भी तेज़ रहेंगे तिल बाना अलसी सरसो अन्डी बिनौला मन्दा रहेगा लाल वस्तु तेज घी सन कपड़ा रुई कपास तेज हो तम्बाकू पसमीना ऊनी रेशमी कपड़े का भाव सम रहैगा

मकरसंक्रान्त

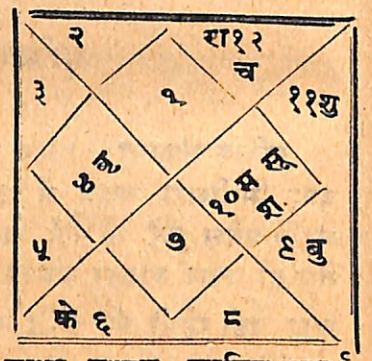

मकरसंक्रान्त ४५ महूर्ति ३६ घड़ी ५३ पल पर प्रवेश करे और वृहस्पति का दिन आकर पड़े तो गैहूं चना तेज रहै मूंग मोठ रमास उर्द बाजरा इत्यादि सस्ते कभीं तेज होते रहें स्वेत वस्तु रुई कपास सन कपड़ा तेज तथा गुड़ शक्कर खांड घी तेज तेलया कत्था मध्यम खानिज पदार्थ सौना चाँदी तांबा तेज लाल रंग चपड़ा लाख मजीठ लाल पशु तेज़ मूंगा मोती जस्ता कलई लोह सस्ता घास फूंस तेज रहै स्याह मिर्च धनिया जीरा अनार दाना इमारती लकड़ी सस्ती रहै।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

कुम्भसंक्रान्त

कुम्भ की सन्क्रान्न १३ घड़ी ३० पल के बाद अश्वनीं नक्षत्र में ३० महूर्त शुक्रवार के दिन प्रवेश करेतो अन्न भाव सम रहे और नाज बाजरा ज्वार उर्दू मूंग इत्यदि में मध्यमता रहै तेलिया बाना अलसी सरसों बिनोला इत्यादि में तेजी लाल रंग गुड़ शक्कर मिर्च लाल चन्दन शहद का भाव शुरू में सस्ती फिर मास के अन्त में तेज हो घी खांड सूती कपड़ा कपास रुई तेज ऊनी और रेशमी वस्त्र सस्ते रहेंगे।

मीनसंक्रान्त

मीनसंक्रान्त १४ घड़ी ४० पल पर कृतिका नक्षत्र में ३० महूर्तिं इतवार के दिन प्रवेश करे तो आधे मास तक अन्न भाव पूर्व मास की भांति रहे बाद में सस्ता होवेगा मोटा अन्न ज्वार बाजरा रमास मूँग उर्द आदि कुछ तेजरहे तेलिया बाना अलसी मूंग फली नारियल सरसों बिनौला तिल तैल तेज हो रुई कपास सन सूत तेज गुड़ शक्कर खांड घी. चावल आधे मास के बाद तेज हो सोना चांदी कलई तांबा मध्यम रहै।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

बारह राशियों का हानि लाभ देखना

बारह राशियों की आमदनी और खर्च एक साल तक देखने का यह नियम है कि अपनी राशि के नामाक्षर और लाभ खर्च के अक्षरों को जोकि नीचे के चित्र में दिये हैं जोड़लो फिर उस में से एक घटाकर आठ का भाग दो यदि शेषाङ्क १,२ ६,७, बचें तो आमद अच्छी और ३. ४, ५, तो खर्च अधिक और कुछ न बचे तो बुरी साल जानो।

किसी किसी का ऐसा भी मत है कि यदि एक बचे तो लाभ २ बचें तो सम ३ बचें तो रोग ४ बचें तो धन नाश ५ बचें झगड़ा हो ६ बचें तो मान और प्रतिष्ठा मिले ७ बचें तो यश मिले और यदि शून्य बचे तो अच्छी साल नहीं है।

लाभ हानि चक्र

राशी	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	२५	११	११	४	२	११	११	५	८	११	८	११
हानि	५	१४	२	११	१४	२	१४	५	८	११	८	८

वर्षा होने के लक्षण

चित्र मासका में यदि प्रातः कालके समय मोर बोले और सायँकालको आसमानमें धनुष पड़े तो अधिक बर्षा हो, जिस महीनेमें पांच शनिवार अथवा मङ्गलवार होतो वर्षा न होवे अथवा कम पानी पड़े यदि तांबेके ऊपर जङ्ग जमने लगे तो शीघ्र पानी बरसे, रातके समय सितारे डूबें या हिलते हुये दिखाईदें तो दो एक दिनमें पानी बरसनेका योगहै।

यदि ज्येष्ट शुक्का प्रतिपदासे दशमी तक बादल रहे बिजली

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

चमके धूपमें तेजी कम दिखाईदे लू न चले तो वर्षा अच्छी नहीं होगी अषाढ शुक्ला १५ और श्रावण कृष्णा १ को बादल हों और बिजली चमक कर घटाघिर आवे तो ७२ दिन तक पानी नही बरसेगा यदि श्रावण शुक्ला सातेंको बादलहो और आधी रात के समय बिजली चमके तथा बादलकी गर्जन होवे तो कम बरसा होगी। श्रावण कृष्ण पंचमीके दिन चन्द्रमा चटकके साथ दिखाई दे तो भी बरसा कम होगी यदि श्रावण शुक्ल १५ के दिन घंटेके भीतर चद्रमा दिखाई दे तो भादों में अधिक पानी बरसेगा।

अंग्रेजी मत से वर्षा योग

सालके शुरू दिन रातके बारह बजे पर बादल होवें और गर्जे तो चित्रमासका में वर्षा अच्छी होवे अगर तीसरी जनवरीकी रातको बादलहो तो भादोंमें पानी अच्छा बरसे चौथी जनवरीको पूर्वकी ओर बादल गर्जे और दक्खिनकी हवा चले तो अकाल [दुर्भक्ष] पड़े ११ जनवरीको बिजलीकी चमक होतो पानी कम बरसे ६ जनवरीको बादलहो बिजली चमके तो फसल अच्छी होगी।

फबरीकी पहिली तारीखकी वर्षा श्रावणमें पानीलाने वालीहै १३ फर्बरीको बादल बिल्कुल साफ रहे तो दरभिक्षकी सूरत है १४ फर्बरीका चन्द्रमा बृहस्पतिवारको दिखाईदे तो चैत्रमें पानी आनेका योगहै। ६ फर्बरीको बादलसाफ रहेतो अन्नकी तेजी रहेगी

६. ७, ८. मार्चका बादल होवें तो चैत्रमासमें ओले पड़ें ८ मार्चकी आधी रातपर बादल होवें तो जेष्ट मासमें आंधियाँ अधिक आवें, १७ १८ मार्चको बादल साफ रहे तो पानी शीघ्र बरसे और हवा अधिक चले २१ मार्चको बादल गर्जें तो श्रावण भादोंमें अन्नकी तेजी होजावेगी।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

३ अप्रैलको बादलहों और बिजली चमके तो बारिस कम होगी ८ अप्रैलको पानी बरसे तो श्रावण भादौंमें पानी अच्छा पड़े अगर पन्द्रह अप्रैलको पानी बरसे और आंधी चले तो फसल खराब होगी ११ अप्रैलको बारिसहो और दक्खिन पूरब की हवा चले तो भादौंमें अन्न तेज होगा।

४ मईको बारस होतो फसल अच्छी ६ मईकी बारस अन्न को तेज करतीहै १४ मईको पानी बरसे तो आयंदा पानी कम बरसेगा १६, १७, १८, मईकी बारिस दुर्भिक्षकारी है। अगर ३० मईको पानी बरसा तो चित्रमासमें पानी अच्छा बरसेगा

३ जूनको पानी बरसे तो भादौंमें बर्षा अच्छीहो अगर ४ जूनको पूर्वी हवा चले और बादल होंतो आषाढ़ श्रावण भादौं तीनों महीनोंमें पानी नही बरसेगा अगर तारीख ६ जूनको दक्खिनकी हवा चले तैल तेज होजावेगा अगर १८ जूनको दोपहरके समय पानी बरसे तो २० दिनतक बरसा न होगी

सादा (सट्टा)चलन बाज़ार निकालने की रीति

गत अङ्कों में तीन अधिक कर प्रत्येक की इकाई और दहाई को लौटावे दोनों को जोड़कर उसमें से एक कम करे फिर उस में आठका भाग देकर शेशांकको लग्नमान कुण्डली बनावे दूसरे गृहमें तथा चोथे घरमें बलवान चन्द्र पड़े और शुभग्रह उसको देखते हों अथवा लग्नका स्वमी दूसरे या तीसरे घर में जाकर बैठे तो बिजयी होगा।

मेष राशि वर्णन

आठ पांच नौ तीनमें, दे ग्यारह का जोड़।
तत्व द्वीपको अलग कर, लीजे सार निचोड़॥

$$\frac{८\times५\times६\times३+११-७}{५-३-१-(६)}=$$

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

बृष राशि

दूआ पंचा सातवा, आठ आठ नौ तीस ।
छः चौकाको अलग कर, पड़ेआय इक्कीस ॥

२२ — २ × ५ — ७ — ६४ — ९०
―――――――――――――――― =
१२० × ६ × ७ × २४ —

मिथुन

क्षित पावक को जोड़दे, नौ ग्यारह पैंतीस ।
घटा पांच छः तीनको, कृपा करे जगदीश ॥

८ — ३ + ९ — ११ × ३५
―――――――――――――――― =
६ — ५ — ३ + २ × ८

कर्क राशि

चलरे सट्टा पट्टा + नौ बिन्दी एका अट्टा ।
कर्कदेख चल जुआ, छः चौका पंचा दुआ ॥

०९ + १ — २ — ८, ६ — ४०
―――――――――――――――― =
५ × ४ — २ + ३ —

सिंह राशि

सिद्धि मिले तो निधि मिले, मिले दड़े में तीन ।
पत्ती पग चुन २ धरे, जोड़ो विविध प्रवीन ॥

९ × ८ + ३ — ४ —
―――――――――――――――― =
११ × ८ — ६ — ४ +

कन्या राशि

आठ सात पच्चीस छै नौ ग्यारह बाईस ।
मिश्र सिंन्धु तट वेगमें, घटा पांच पच्चीस ॥

८ - ७ — २५ + ६, ९ + ११ — २२ — ६ — ४
―――――――――――――――― =
११[illegible] २२ × (८ — ६) ४ — ६ × (८ × ११ ÷ ५

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

तुल राशि

बृषका मङ्गल केन पर,
बारह में गुरुवार।
अट्टा राहू में पड़ा,
सट्ठा लेउ निहार॥

(३४—३८) ३५×५४+८
६८—३३—३३—३३—१

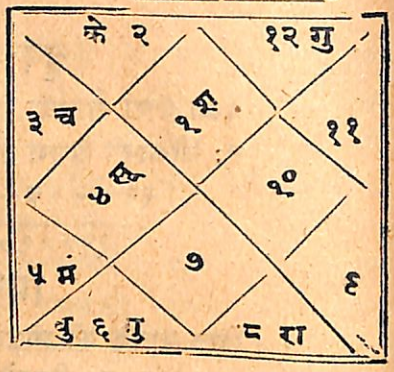

बृश्चिक राशि

जो बिन्दी हो तीनपर, बारह दऊं निकाल।
सत्यसिंधु को जोड़कर, रक्षक दीनदयाल॥

००० ३—१२—२५÷८८
३८+५८÷४ (६×११)

धन राशि

नौ बिन्दी एका छः पञ्जा, सत्ता के सङ्ग दुआ।
पञ्जा चौका योग मिलाओ, देखो धनका जुआ॥

६ १ ००००×६, ७+२
५+४—००१, २५, ३१×११÷

मकर राशि

अट्ठासी तेतीस धन, दे छत्तीस मिलाय।
मिले पिचासी तीन दस, सत्त सात घटाय॥

८८- ३३- ६—३६ ४
८५+१०—१०—१०—७+७

कुम्भ राशि

एक सतासी पिच्चासी, पैंतीस बचाना अच्छा है।
मिला आठ दो घटा बढ़ाकर, चलो रामकी इच्छा है॥

१—३७—८५—३५—
८+२—४—६÷४४

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मीन राशि

कर तिगुना पैंतीस घटादो, किसकी करे प्रतीक्षा है।
नौ तेरह को मिला एक, होजावे भाग्य परीक्षा है॥

$$\frac{३५ \times ३ — २ \div २५ — ८}{९ + १३ — १ \div \times \div ६}$$

विदेशी तेजी मन्दी (लोटरी) चलन बाजार

लोटरीके सौदे भारतके अतिरिक्त अन्य देशोंमें होते हैं उसमें फल पानेका उत्तम उपाय यह हैकि ग्रंथकर्त्ताके नामके अक्षर जोड़कर नीचे वाले चक्रसे मिलाओ फिर उसमें से दो घटाकर आठपर भागदो शेषांकको लग्न मानकर कुन्डली बनाओ यदि धनेशमें चन्द्रमा बलवान होकर पड़े अथवा चौथे घरमें चन्द्र बलवान होकर पड़े तो धन मिलेगा

सौदा करते समय प्रश्नकर्त्ता अपने बांए नाकके स्वरका ध्यानकर सौदा करे यदि बांया स्वर चलताहो और पृथ्वी तत्व उस समय पर उपस्थितहै। तो विज की संभावना है

लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	१	२	३	८	५	६	७	८	५	६	७	८
हानि	६०	७०	८०	६०	१००	२००	३००	४००	५००	५०	४०	३०

किसी किसीका ऐसाभी मत हैकि नामके अङ्कोंको अलग अलग जमा करके हर एक को ८ पर भागदे अगर उन अङ्कोंमें शून्य आकर पड़े तो हानि उठावेगा यदि एकसे लेकर आठ तक कोई अंक शेष बचे तो फिर उसकी कुन्डली बनाकर फल देखे धनमें जो चन्द्र आकर पड़े तो वर्तमान शाके ८से घटादो फल अङ्क ठीक निकलेगा उसीका सौदा करे।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सातवां अध्याय

वर्षफल बनाना

वर्षफल बनानेमें समय दिन तिथि पल घड़ीकी आवश्यकता होतीहै इनमें सेभी तीन वातें मुख्यहैं अर्थात् मुन्था, मुद्दशा लघुपचवर्गी इनके बिना वर्ष नहीं बनता

मुन्था किसे कहते हैं

बीती हुई आयुके वर्षोंको जिस सालका वर्ष बनानाहै उसमें जन्म लग्नजोड़ १२ पर भाग देनेसे जो शेषबचे उसको मुन्था कहेंगे

मुद्दादशा किसे कहते हैं

बीती हुई वर्षोंको जन्म लग्नमें जोड़ देनेसे दोको घटाकर ९ का भाग देने से जो शेष वचे उसीको दशा मुद्दा कहेंगे। इसमे विंशोत्तरीकी आवश्यकता पड़ेगी।

लघु पंचवर्गी

वर्षाके पांच स्वामियोंको लघु पंचवर्गी कहतेहैं जिसमें [१] जन्म लग्नका स्वामी [२] वर्षका स्वामी [३] मुन्थाका स्वामी [४] त्रेराशि स्वामी [५] समय स्वामी।

लघु पंचवर्गी व्याख्या

जन्म लग्नके अधिकारीको जन्मका स्वामी कहते हैं वर्ष के अधिकारीको वर्षका स्वामी कहतेहैं मुन्थाके अधिकारीको मुन्थाका स्वामी कहतेहैं त्रेराशि स्वामी १२ लग्नोंके तीन समान भागोंको त्रिशांश कहतेहैं और ऊसके अधिकारीको स्वामी कहेंगे। समयके अधिकारीको समयका स्वामी कहतेहैं।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

वर्ष बनाने की रीति

जन्म पत्र या वर्ष पत्र के जितने साल बीत चुकेहों उसको जिस साल का वर्ष बनाना हो उन में से घटादो अन्तर फलको सवाया करो वह दिन होंगे फिर उसको आधा किया वह घड़ी हुई ड्योढ़ा किया तो पल हुऐ फिर उसमें जन्म समयके वार घड़ी पल दिये चाहे हुये वर्षके वार घड़ी फल होगया इसके बाद तिथि बनाई जावेगी उसकी यह रीति है कि जिस संक्रान्तके जिस अंश का जन्म हो उनको वर्ष निकालने वाले पंचाङ्ग में देखो उन अंशों पर कौनसी तिथि है उसी का वार भी देखे यदि वार तिथि ठीक मिल जायें तो सही है यदि आगे पीछे हों वार को प्रधान मानकर तिथि ली जावेगी फिर उसकी कुन्डली बनाकर वर्ष फल निकाल लो।

उदाहरण

यदि किसी का वर्ष सम्वत् १९८९ का बनाना है और तुम्हारे पास सम्वत् १९८१ का वर्ष मौजूद है।

∴ १९८९—१९८१ = ८ शेषांक हुऐ

∴ ८ को सवाया करना है ∴ ८ × १$\frac{१}{४}$ = १० दिन हुऐ

अब १० को आधा किया १० × $\frac{१}{२}$ = ५ घड़ी हुऐ

इसके बाद ८ का ड्योढ़ा किया ८ × १$\frac{१}{२}$ = १२ पल हुऐ

अब १० दिन ५ घड़ी १२ पल इसमें जन्म दिन बृहस्पति ५ वां है तथा २१ घड़ी ४१ पल है इस को जोड़ दिया १० दिन ५ घड़ी १२+२१ घड़ी ४१ पल = १० दिन २६ घड़ी ५३ पल के इष्ट काल २६ घड़ी ५३ पल का हुआ इसी के अनुसार पंचाङ्ग में देखकर कुन्डली बनालो यहां पर केवल कल्पित कुन्डली देकर उसके गृह फल लिखते हैं यह कुन्डली भादों शुक्ला ५ सम्वत् १९८५ ४४ घड़ी ४७ पल इष्टकी है पाठक गण इसी गणित से वर्ष

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

कुन्डली बना लिया करे और पंचाङ्ग द्वारा गृह स्थापित करदिया करें जैसाकि ऊपर वर्णन होचुका है। वर्षकुँडली पृष्ट ८१पर देखो

मुन्था निकालना

जिस साल का वर्ष बनाना है उसको बीती हुऐ जन्म पत्र के वर्षों को जन्म लग्न में जोड़ कर ग्रह का भाग दो मुन्था निकल आवेगी। मुन्था एक वर्ष में एक लग्न चलती है।

उदाहरण

जैसे कि किसी के जन्म को ४० वर्ष बीत चुके हैं और नामेष राशि का है

∴ ४०+१=४१÷१२=५ बचे ३$\frac{५}{१२}$=५बचे ∴ सिंह लग्न की मुन्था ५ वीँ हुई उस को वर्ष के ५ वें घर में लिख दिया।

मुद्दादश निकालना

जन्म पत्र यो वर्ष पत्र को जितने दिन बीत चुके हों उनको जन्म नक्षत्र में जोड़कर २ घटा कर नौ का भागदेदो यदि एक बचे तो सूर्य की दशा दो बचें तो चन्द्र ३ बचे मंगल चार बचे तो राहू ५ बचे वृहस्पति ६ बचे शनि ७ बचे बुद्ध वार कमानुसार दिशाऐं निकाल लो अन्त में८ बचे तो शुक और शून्य आवे तो राहू की दिशा जानो।

मुद्दा दिशा से ही वर्ष आरम्भ होता है। मुद्दा दिशा का तिगुन बिशोत्तरी समझना चाहिये नीचे देखो।

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मङ्गल	राहू	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
विशेवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९
मुद्दादिन	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मुद्दा निकालने का उदाहरण

माना कि किसी का जन्म अश्वनी नक्षत्र का है और उस को ७ वर्ष बीत चुके हैं।

∴ १ अश्वनी नक्षत्र १+७=८ इस में से दो घटाये।

८-२=६ इस में ९ का भाग दिया

६÷९=६ के इसमें ९ भाग नहींजाता है इसलिये यहीशेष है

∴ ६ दिशा शनीश्चर की हुई इस वर्ष का वर्ष शनीश्चर से आरम्भ होगा।

वर्ष पति समय

यदि वर्ष दिन में लगे तो मेष राशि का स्वामी सूर्य वृषका चन्द्र मिथुन का बुध कर्क का मङ्गल सिंहका वृहस्पति कन्या चन्द्र तुल का बुध वृश्चिक का मङ्गल होता है। यदि रात्रि में लगे तो सिंह का सूर्य वृष का शुक्र मिथुन का शनि कर्क का शुक्र होता है।

धन का स्वामी शनि मकर का मंगल कुम्भ का वृहस्पति मीनका चन्द्र स्वामी चाहे दिनमेंवर्ष लगे चाहेरात्रिमें लगे) रहेगा

समय का स्वामी

दिन में वर्ष लगे तो जिस लग्न में सूर्य हो उसका स्वामी दिनका स्वामी होगा सूर्य इसी प्रकार जो वर्ष रात्रि में लगे तो जिस लग्न में चन्द्रमा हो उसका स्वामी रात्रिका चंद्र रहेगा।

मुन्था फल

९-१०-११-वें घर की अच्छी १-२-३-५ की मध्यम ४-६-७-८ १२ की अशुभी होती है। सातवां घर स्त्री का है इस लिये स्त्री संबंधी कष्ट होता है। आठवां घर आयु का है इस लिये रोग

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

व मृत्यु कारक है। चौथा घर माता का है। वह सुख नाश करता है। अथवा माता को दुख पहुंचाता है। छटा घर चोर और शत्रु को दुख देता है। आठवें भाव का चोर रोग दुर्व्यसन पैदा करता है। अपने स्वामी का शुभ है। पापगृहों सहित दुखदाई है।

वर्ष का स्वामी

वर्ष में जो गृह पांचौ अधिकारियों में अधिक बली होकर लग्नको देखताहो वही वर्षका राजा अथवा वर्षका स्वामी होगा।

वर्ष के स्वामी का फल

सूर्य बली हो तो मान और प्रतिष्ठा बढ़े निर्बल सूर्य माता पिता मित्र इत्यादिकों से दुख देता है चन्द्रमा वर्ष का स्वामी नहीं होता रात्रि के समय जब लगे तो उत्तम क्योंकि जब कोई ग्रह अधिकारी नहीं होता तो चन्द्रमा होजाता है।

चन्द्रबली उत्तम फल देता है निर्बल मध्यम क्षीण अधम फल दाता है

बली मंगल वर्ष का स्वामी होतो शत्रु मित्र बने धनादि का सुख हो मध्यम होतो रक्त रोग की पीड़ा हो निर्बल होतो अशुभ फल देगा। गुरु की दृष्टि यदि निर्बल भी होतो शुभ है। बलवान बुध वर्षेश राज मकान धन और यश देता है बृहस्पति बली आदि का सुख देगा शुक्र से नाना प्रकार के धन धाम की प्राप्ति हो शनि वर्षेश होतो भूमि लाभ हो।

१२ घरों का फल

पहिले में चन्द्रमा पाप युत अथवा सूर्य मंगल शनि राहू केतू इन में से कोई होतो चिन्ता पैदा करें बुध शुक्र गुरु पूर्ण चन्द्र होतो शुभ है। दूसरे में पूर्ण चन्द्र बुद्ध बृहस्पति शुक्र

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

वली शुभ ग्रह सहित होतो धन प्राप्ति सूर्य मंगल राहु केतू और क्षीण चन्द्रमा अशुभ हैं तीसरे घर में शुभ ग्रह धनवान होतो धन लाभ विशेष कर चन्द्रमा लाभ दायक है। चौथे घर में पूर्ण चन्द्र शुभ ग्रह माता का प्यार भूमि लाभ देते हैं पाप ग्रह और क्षीण चन्द्रमा अशुभ है पाचवें घर में चन्द्र वली तथा शुभ ग्रह पुत्र लाभ देते हैं मुख्य कर शुक अधिक लाभ दायक है। छठे घर में पाप ग्रह शत्रु का व्योपार का नाश करता मामा को अशुभ है इसके विप रीति शुभ ग्रह रोग दायक हैं। इस में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि छटा घर मामा को क्यों फल देता है इसका उत्तर यही हैकि चौथा घर माताका है उससे दूसरा उसके भाई का दोता है।

सातवेंके शुभ ग्रह स्त्री तथा साझियों को सुखदायक है क्षीण चन्द्रमा राहु केतू स्त्री का नाश करते हैं अशुभ घर सब पूरे ग्रह पड़ते हैं तथा पाप युक्त होतो मृत्युकारकहै क्षीण होतो मृत्यु हो मंगल राहू केतू अधिक कष्ट देते हैं यहां तक कि मृत्यु भी करा देते हैं सूर्यसे दाह रोग शनिसे त्रदोष होता है नवें घर में शुभ ग्रह सुखकारक पाप ग्रह दुखदाई होते हैं यात्रा में धन का नाश कराने वाले हैं दसम ग्रह में शुक बृहस्पति बुध से राज सन्मान हो पिता का धन मिले सूर्य मंगल से यश बढ़े ग्यारहवे घर सब ग्रह अच्छा फल देते हैं बारहवें घर में शनि हर्ष दायक है पाप ग्रह होतो व्यर्थ धनका नाश हो शुभ ग्रह होने से धर्म में धन खर्च होता है।

लग्नेशफल

वली लग्नेश सुख दायक हैं बली सूर्य राज सन्मान स्वर्ण लाभ चन्द्र वली हो चांदी मोती मिले मंगल से तांबा और लाल पदार्थ मिले बुध से यश और वृद्धि हो बृहस्पति से प्रतिष्ठा बढ़े शुभ वली सुखदायक है शनि नीचों से धन प्राप्ति

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

करावे राहू केतू वृत्तियों धन मिले। निर्वल लग्नेश दुखदाई हैं मध्यम २ फल देगा।

दूसरे घर का फल

यदि गुरु जन्म में धनका स्वामी हो और वर्षेश भी होतो धन बढ़े, बुध धन और आयु का स्वामी है यदि ५।६।१०। ११। घर में होतो विद्या बढ़े अथवा लिखने पढ़ने से धन मिले धनस्थान मंगल देखे तो धन मिले, शुक्र स्वामी होतो धन बढ़े बुध बृहस्पति शुक्र धनस्थान में हो अथवा देखते होतो धन लाभ हो। बृहस्पति शुक्र धन में हो धन मिले तीसरे घर में होतो भाई से चौथे में माता से पाचवें सेपुत्र को धन मिले छटे माता से सातवें स्त्री दसवें पिता से आठवें खर्च और बारहवें से हानि होती है।

तीसरे घरका फल

वर्ष का स्वामी सूर्य शुक्र बलवान होकर तीसरे में पड़े तो भाईयों में प्रेम बलवान बृहस्पति सुखदायक मंगल के साथ चन्द्रमा तीसरेमें होतो भाईयोंमें झगड़ाहो शनि और मंगलकी राशि १।८ में होवे बुध राशि ३।६ मेंहो तो भाईयोंमें रोगहो शनि राशिका मंगल मंगलदाता तीसरे घरका स्वामी अस्त होतो भाईयोंका नाश।

चौथा घर

चौथे घरका सूर्य पापगृह सहित वैठाहो तो पिता चन्द्र पापगृह युक्तभावका मंगल भाईयों का बुध सवारीका वृहस्पति पुत्रका शुक्र होतो मामाका शनि स्त्रीका राहु केतु अपने शरीर का नाशकर्त्ता अपना दुखदाईहै। जन्म कालमें जिस राशिका चन्द्र हो उसीपर शनि आ वैठेतो माता से शत्रुता तथा जन्म भूमि त्याग हो

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

पाचवां घर

पांचवें घरमें बृहस्पति वर्षका स्वामी होकर पंचम वा ग्यारहवेंमें वैठे तो पुत्र लाभ सूर्य मंगल बुध शुक्र वर्ष स्वामी ५वां ११वां पुत्रदाताहै शुभगृहोंकी राशि २।७।३।४।६।१२ बुध पाचवें ग्यारहवें से पुत्र मिले पांचवीं बृहस्पति पुत्रदाताहै मंगल बुध वर्षेशहो बृहस्पतिकी राशि धन मीन मेंहो तो पुत्र उत्पन्न हो। लग्नसे पांचवे सूर्य बृहस्पति हीन होतो गर्भ गिरे पर जन्म लेते बालक मर जावे। लग्नसे पंचम बुध शुक्र चन्द्रमा वलीहो कर पड़े तो कन्याहो। पंचम भाव में शनि होतो मूँढ़ गर्भा राहु केतु होतो मरा बच्चाहो। शुक्र मंगल पुत्रकी मृत्यु करता है। पंचमेश मंगलके साथ अष्टम स्थान होतो पुत्र मरे

छटे घर का फल

वर्ष स्वामी बक्री शनि बृहस्पति पांचवे घरमें अशुभ, मंगल बक्री रुधिर रोग करे, तथा चोरोंका भय शुक्र निर्बल और वीर्य रोगको करे चन्द्रमा वीर्यरोग बुध बातरोग जन्म में जिस राशि शनि उसीपर वर्ष लगे तो शीतरोग यदि शनि पापगृहों युक्तहो तो मृत्यु मंगलकी जन्मराशि वर्ष लग्नमें जो पापगृह युक्त होतो पित्तरोग अग्नि का भय तथा रुधिरयोग। शुक्र सूर्य जन्म कालमें एक राशि परहों तो प्रमेह मुथेश पापगृह युक्त होतो जाड़ा बुखार कन्या तुला मिथुनका शुक्र शीतरोग पैदा करताहै

सातवें घर का फल

वर्षेश शुक्र सातवे घर स्त्री सुखदे मंगल देखे तो प्रेम बढ़े वर्षेश शुक बुध अधिकारीसे देखे तो परनारी से प्रेम हो जन्म राशिका शुक्र हो उसी पर वर्ष लगे तो उस साल ब्याह हो

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अष्टम घर फल

मंगल निर्बल पापगृह युक्त होतो चोट लगे, निर्बल मंगल मेष, सिंह, धन का होतो अग्नि से जले, मिथुन, कन्या, तुला धनका होतो शत्रुओंसे मृत्यु हो निर्बल मंगल बली हो दसवें घर बैठे तो राज दंड मिले अथवा चोर शत्रुओंसे दुखहो चौथे में मंगल होतो मातासे बैर जन्मभूमिका त्यागहो बुध अधिकारी अस्तहो और मंगल दग्ध होतो विदेशमें कैदसे मृत्युहो वर्ष लग्न अष्टमका स्वामी आठवेंमें होतो मृत्यु हो जन्मका अष्टम स्वामी शनि वर्षके आठवेंमें हो तो वर्षके आरम्भ मृत्युहो

नौवें घर का फल

वर्षेश मङ्गल होतो शुभ अस्त शुक्र ३।६ में हो मार्ग चलना पड़े बली बुध ३।६ में तीर्थ करावे जन्म में बृहस्पति जिस राशि पर वर्ष लगे तो यात्रा में मृत्यु हो।

दसवें घर का फल

वर्षेश दशवें घर का राज सन्मान जन्म में सिंह राशि में सिंह राशि में सूर्य हो वर्ष में बली होकर दसवें में पड़े तो नया स्थान मिले।

ग्यारहवें घर का फल

कोई भी बली गृह ग्यारहवें घर में बैठे तो धन लाभ हो शुभग्रह देखें तो भूमि से धन मिले। वर्षेश बुध ग्यारहवें स्थान में शुभग्रहोंके साथहो अथवा देखताहो तो व्यापार में धन मिले

बारहवें घर का फल

यह घर खर्च का है शुभ ग्रह हो तो शुभकार्य में अशुभ ग्रह हो तो अशुभ कार्य में धन खर्च हो।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

वर्ष से वर्ष बनाना

गत वर्ष के चार घड़ी पलादिकों में से दिनोंमें १ अङ्क घड़ियों में १५ का अङ्क पलों में ३१ विपल हों तो ३० का अङ्क जोड़ कर अगले वर्ष के चार घड़ी पल बनालो यही इष्टकाल होगा इस में ड्योढ़ा सवाया करने की आवश्यकता नहीं चाहा हुआ इष्ट निकल आवेगा उसी से कुण्डली बनाकर गृह स्थापित करदो वर्ष बन जावेगा फिर उनका फल क्रमानुसार लिखते जाओ।

लेखक की अन्तिम विनय

इस पुस्तक में बड़े २ प्राचीन गुप्त ग्रन्थों का संग्रह किया गया है और उन्हीं के अनुसार फल लिखा है आगे गौ प्रजा का भाग्य बलवान है ईश्वर गति अपार है जो हो जावे थोड़ा है इससे यदि कदाचित कोई फल ठीक न बैठे तो शास्त्र को दोष नहीं गणित या ईश्वर इच्छा प्रबल है।

भवदीय—

वृश्चिक राशि

वर्ष कुन्डली

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

८४ आसनोंके चित्रों वाला

सचित्र कोकशास्त्र रहस्य

मित्रो ! हमारा दावा है कि आज कल के कोकशास्त्रों में सबसे अच्छा और लाभ दायक कोकशास्त्र हमारा है यदि विज्ञापन के मुताबिक न होतो दूनी कीमत वापिस करेंगे इसमें स्त्री पुरुषों के जाति भेद लक्षण, मनचाही सन्तान पैदा करने के नियम, गर्भ धारण सहवास काल उम्र भर जवान बनाये रखना, स्त्री को क़ाबू में रखना ८४ आसनों के चित्र गर्भ परीक्षा बालक रक्षा और बीर्यरक्षा नामर्द, नपुन्सक और बांझ को सन्तानवान बनाना यंत्र, मंत्र, तंत्र, स्त्री पुरुषोंकी प्रत्येक रोग की रामबाण औषधियां अनेक गुप्त भेद जो किसी दूसरी पुस्तक में नहीं मिलेंगे मित्रो ? यही असली कोकशास्त्र है जिस की खोज में आप वर्षों से थे मूल्य १) डाक महसूल ।=)

लखपती बनने का सरल साधन

दस्तकारी रबर

इस में देशी दरख्तों के दूध से रबर बनाना रबर की वस्तुएं जैसे मोटरसाइकिल घोड़ा गाड़ी आदि के टायर ट्यूब बच्चों के खिलौने गेंद गुब्बारे गटापारचे के झुनझुने आईगिलास चश्मे और चश्मों के फ्रेम गेलस गेटिस रबर के फीते कंघा कंघी बरसाती कपड़ा रबर का फर्स ईंटें फौएटेन पेन इत्यादि वस्तुयें रबरकी तैयार करना स्वयं सीखलेंगे थोड़ासा उद्योग करने पर आप बिलायती चीजों से अच्छी और सस्ती वस्तुएं बनाने लगेंगे फिर क्या है हिन्दुस्तान का बाजार आपके हाथ में होगा और आप थोड़ी पूंजी से लखपती बन जावेंगे। मू० १) डा म ।)

पता—गुलजार कम्पनी अलीगढ़

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

ॐ

यच्च कामसुखं लोके यच्च दिव्यंमहत्

सुखं । तृष्णक्षय सुखं यच्च

नार्हत: षोडशीं कलाम्

दशे सुप्राकला पंक्त: कसलो द्विभा

वान सैवयम हन्डार्थ्याकलिलो

कं सहयति यगे यगे ॥

१ हृदवा पंचवतार

२ द्विवा द्विवा कलावतार

३ सुदिव्य सुंपावतार